सन्तराम वत्स्य

दो बहनें

S-44

दो बहनें

जादूगरनी ने समझा-बुझाकर, डरा-धमकाकर, शक्ति और सम्पत्ति का लालच देकर, राजकुमार को तारामती से विवाह करने को राजी करना चाहा, पर वह टस से मस नहीं हुआ. तारामती ने रोकर, उसके पांवों में पड़कर, गिड़गिड़ाकर उसे मनाना चाहा पर राजकुमार पर इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा. खाना-पीना और सोना छोड़कर तीन दिन और तीन रात जादूगरनी और तारामती राजकुमार को मनाने का प्रयत्न करती रहीं, पर वह नहीं माना. अन्त में निराश होकर जादूगरनी बोली, "अगर तू अपनी जिद्द नहीं छोड़ता है, तो मेरी अन्तिम चेतावनी सुन ले—या तो तू तारामती से विवाह कर ले या फिर विवाह का वचन तोड़ने के अपराध में सात साल का दण्ड भोगो. मैं तुम्हें नीलकंठ पंछी बनाकर छोड़ दूंगी. तुम सात साल तक पंछी रहोगे. बोलो, क्या चाहते हो ?"

दो बहनें

सन्तराम वत्स्य

शकुन बाल पॉकेट बुक्स.

© शकुन प्रकाशन, दिल्ली

मूल्य : एक रुपया

चित्र : नारायण

•

शकुन बाल पॉकेट बुक्स
३६२५, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

•

मुद्रक : भारती प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

DO BAHANEN : Santram Vatsaya
SHAKUN BAL POCKET BOOKS, DELHI-6

कहानी-सी झूठी नहीं. बात-सी मीठी नहीं. न कहने-वाले का दोष, न सुननेवाले का दोष. दोष जोड़ने-वाले का

दूर दक्खन में, पुराने समय में विजयनगर में राजा विजयसेन राज्य करता था. विजयनगर में ऊंची-ऊंची दीवारों और बुर्जियोंवाला एक किला था. राजा इस किले में रहता था. किले के साथ लगा हुआ विजयनगर था. विजयनगर ऊंचे, कई मंजिले भवनों, मंदिरों, लम्बे-चौड़े बाजारों, कीमती सामान

से भरी हुई दूकानों और अपने कारीगरों के लिए प्रसिद्ध था. नगर के चारों ओर ऊंची पक्की दीवार थी. दीवार के बाहर मीलों तक हरे-भरे बाग-बगीचे फैले हुए थे.

राजा का कोष धन-धान्य से भरा हुआ था. सेना शत्रुओं से राज्य की रक्षा करती. प्रजा सुखी थी. राजा दयालु और न्यायप्रिय था. राजा की पटरानी का नाम था रूपमती. रूपमती को राजा बहुत चाहता था. रूपमती के एक ही बेटी थी. नाम था इन्दुमती. राजकुमारी इन्दुमती अत्यन्त सुन्दर थी— भोली-भाली. राजा-रानी उसे बहुत प्यार करते थे. महल की दासियों से राजकुमारी कभी तीखा नहीं बोलती. कभी किसी पर रोब नहीं गांठती. इसलिए सभी उसे बहुत चाहते थे.

राजा के एक और रानी भी थी. उसका नाम था राजलक्ष्मी. राजलक्ष्मी को भी एक बेटी थी. उसका नाम था तारामती. तारामती चिड़चिड़ी, गुस्सैल और अभिमानी स्वभाव की थी. दासियों को

वह हर घड़ी झिड़कती रहती. बढ़िया-से-बढ़िया भोजन में भी सौ-सौ बुराइयां बताती. उसके तेवर सदा तने रहते. हंसना-मुसकाना तो वह जानती ही नहीं थी. क्योंकि इन्दुमती को सभी दासियां खूब चाहती थीं और तारामती के साथ काम भर की बात करती थीं, इसलिए तारामती इन्दुमती को अपना शत्रु समझती थी. पर उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती थी क्योंकि राजा भी इन्दुमती को तारामती से अधिक चाहता था.

राजा को राज-काज से जब कभी अवकाश मिलता तो वह रूपमती के महल में चला आता और इन्दुमती से खेलता-बोलता रहता. वह तो राज-लक्ष्मी के महल में बहुत कम जाता. कभी चला भी जाता तो रानी राजलक्ष्मी पटरानी रूपमती की बुराई करने लगती और तारामती इन्दुमती की. राजा को ये बातें अच्छी नहीं लगतीं, इसीलिए वह उनके पास बहुत कम जाता.

एक बार पटरानी रूपमती बीमार पड़ गयी.

राजवैद्य ने अच्छी-से-अच्छी दवाइयां दीं पर रोग बढ़ता ही गया. रानी राजलक्ष्मी भी अपनी सौत रूपमती का हाल-चाल पूछने आती. वह मन में सोचती कि रूपमती मर जाए तो अच्छा हो यों सोचते-सोचते एक दिन उसके मन में आया कि क्यों न मैं ही दवाई में जहर मिलाकर रूपमती को मार डालूं. उसने रानी की टहल-सेवा करनेवाली दासी की नजर बचाकर, बीमार रानी के सिरहाने रखी हुई दवाई में जहर मिला दिया. रानी रूपमती तो रोग के कारण अचेत थी ही, उसे क्या पता लगता.

दासी ने निश्चित समय पर दवाई रानी के मुंह में डाली और ऊपर से पानी डाल दिया ताकि दवाई गले के नीचे उतर जाए. ज्योंही दवाई गले के नीचे उतरी, तीखे विष के प्रभाव से रानी के प्राण निकल गए.

सबने यही समझा कि रोग के कारण रानी की मृत्यु हो गयी राजलक्ष्मी पर किसी को सन्देह नहीं

हुआ.

रानी की मृत्यु से सारे राज्य में शोक की लहर दौड़ गयी. राजा विजयसेन अपनी प्यारी रानी की मृत्यु के शोक में ऐसा डूबा कि उसकी भूख-नींद उड़ गयी. इन्दुमती का तो और भी बुरा हाल था. मां के लिए रोते-रोते उसकी आंखें सूज गयीं और शरीर सूखकर कांटा हो गया. दासियां हरदम उसे धीरज बंधाती रहतीं और उसका जी बहलाने का प्रयत्न करतीं.

सभी को रानी की मृत्यु का दुःख था किन्तु रानी राजलक्ष्मी और तारामती मन में बहुत प्रसन्न थीं. ऊपर से दिखावे के लिए वे झूठे आंसू बहातीं और स्वर्गीया रानी के गुणों का बखान करती रहतीं.

रानी राजलक्ष्मी ने सोचा कि राजा को अपने वश में करने का यही अवसर है. वह दिन-रात राजा को घेरे रहती और राजा के सारे काम अपने हाथ से करती. अब वह राजा से स्वर्गीया रानी की

खूब प्रशंसा करती और उसके लिए आंसू बहाती रहती. वह इन्दुमती का भी ध्यान रखती. उसे धीरज बंधाते हुए कहती, "मैं भी तो तुम्हारी मां हूं. तू तो मेरे लिए तारामती से भी बढ़कर है." वह इन्दुमती को अपनी छाती से चिपका लेती और बड़े लाड़ लड़ाती.

रानी राजलक्ष्मी को दासियों की तरह दिन-रात अपनी सेवा में लगा देखकर और इन्दुमती को अपनी बेटी तारामती की अपेक्षा अधिक प्यार करते देखकर राजा ने सोचा कि राजलक्ष्मी तो बहुत अच्छी है, नहीं तो कौन स्त्री अपनी सौत की संतान का इतना ध्यान रखती है. महल में इतनी दासियों के होते हुए भी रानी राजलक्ष्मी दिन-रात मेरी सेवा में लगी रहती है. मनाह करने पर भी नहीं मानती. ऐसी पतिभक्ति, ऐसी सेवा-परायणता तो स्वर्गीया रानी रूपमती में भी नहीं थी. राजा राजलक्ष्मी के गुणों पर मोहित हो गया. धीरे-धीरे रूपमती को याद भूलने लगी और उसकी जगह राजलक्ष्मी ने

ले ली. पर हाय बेचारी राजकुमारी इन्दुमती! उसकी मां तो उसे सदा-सदा के लिए छोड़ गयी थी.

राजा ने समझा, रानी राजलक्ष्मी इन्दुमती का बहुत ध्यान रखती है, इसलिए उसने उसे राजलक्ष्मी के महल में भेज दिया जिससे दोनों बहनें इकट्ठी रहें और खेलें-कूदें. राजा भी राजलक्ष्मी के महल में रहने लगा.

अब रानी ऐसा प्रयत्न करती कि इन्दुमती राजा के सामने न पड़े और जैसे राजा रूपमती को भूल गया, वैसे ही इन्दुमती को भी भूल जाए.

रानी राजलक्ष्मी की एक जादूगरनी से जान-पहचान थी. उसके जब सन्तान नहीं होती थी, इस जादूगरनी ने कुछ टोना-टोटका किया था और उसके बाद ही तारामती का जन्म हुआ था. राजलक्ष्मी मानती थी कि जादूगरनी की कृपा से ही तारामती जन्मी है. वह अब भी चोरी-छिपे महलों में आती थी. तारामती उसे अपनी धर्ममाता मानती

थी और रानी रुपए-पैसे से उसकी सहायता करती रहती थी.

राजलक्ष्मी ने जब देख लिया कि राजा अब पूरी तरह मेरे वश में हो गया है तो उसने इन्दुमती की उपेक्षा करनी प्रारम्भ कर दी. वह जब-तब राजा से इन्दुमती के बुरे व्यवहार की शिकायत करती रहती. तारामती तो पहले से ही उसे अपना शत्रु समझती थी वह अब इन्दुमती को खूब तंग करती. उसके साथ दासियों जैसा व्यवहार करती और बात-बात पर झिड़क देती. जो दासियां इन्दुमती का पक्ष लेतीं, वह उन्हें अपनी रानी मां से कहकर महल से निकाल देती. मां-बेटी मिलकर बात-बात में इन्दुमती को तंग करतीं और नीचा दिखाने का प्रयत्न करतीं. पर इन्दुमती सब-कुछ चुपचाप सह लेती और किसी से कुछ न कहती. जो कुछ रूखा-सूखा मिलता उसे खा लेती और जो फटा-पुराना मिलता उसे पहन लेती. राजा तक उसे पहुंचने नहीं

दिया जाता. राजा अब उसे याद भी नहीं करता.

इन्दुमती और तारामती की अवस्था अब विवाह के योग्य हो चली थी. राजा ने इस सम्बन्ध में रानी राजलक्ष्मी से बात की. रानी ने कहा, "मेरे विचार में पहले तारामती का विवाह होना चाहिए. वह इन्दुमती से कुछ मास छोटी है पर देखने में बड़ी लगती है. इन्दुमती बहुत दुबली-पतली है. उसका विवाह तो अभी कुछ वर्ष न हो तो भी कोई अन्तर न पड़ेगा."

राजा तो अब हर बात में रानी की सलाह से काम करता था. जैसा रानी ने कहा, उसने मान लिया.

राजा ने पुरोहित को राजकुमारी तारामती के लिए वर ढूंढने का काम सौंपा.

पुरोहित ने विक्रमगढ़ के राजकुमार बलवंतसिंह को पसन्द किया. निश्चय हुआ कि राजकुमार विजय-

नगर आएगा ताकि राजा-रानी भी उसे देख सकें और वह भी राजकुमारी को देख ले.

राजकुमार बलवन्तसिंह के स्वागत-सत्कार के लिए नगर और राजमहलों को सजाया गया. अनेक दास-दासियां, रसोइए और नौकर-चाकर नियुक्त किए गए. राजमहल का एक भाग राजकुमार के ठहरने के लिए खाली कर दिया गया. कीमती गलीचे बिछाए गए. महंगे रेशमी पर्दे लगाए गए. राजकुमार को भेंट देने के लिए बहुमूल्य वस्त्र और रत्नजड़ित आभूषण तैयार कराए गए. इस सारी व्यवस्था को देख-रेख स्वयं रानी कर रही थी. वह जानती थी कि उसकी बेटी रूप-गुण में तो ऐसी है नहीं कि कोई राजकुमार उसे मन से चाहे, इसलिए धन-रत्न देने का प्रलोभन देने का निश्चय किया. पर यह रानी की भूल थी. विक्रमगढ़ तो विजयनगर से भी बड़ा राज्य था. राजकुमार को धन-रत्न की कोई आवश्यकता नहीं थी. वह तो रूप-गुण वाली राजकुमारी रूपी रत्न को प्राप्त करना चाहता था.

राजकुमारी तारामती का साज-शृंगार करने के लिए दूर-दूर से बढ़िया रेशमी वस्त्र मंगाए गए थे. कामदार, तिल्ले-गोटे वाले, कढ़ाई किए हुए, मखमल और ऐसे महीन पारदर्शी रेशम के वस्त्र तैयार किए गए कि जिन्हें देखते आंखें नहीं भरती थीं. सोने और काढ़ने वालियों की भीड़ जुटी हुई थी. नहलाने और सजाने वालियां, सिर के बाल गूथने वालियां, मेंहदी लगाने वालियां, काजल और पराग-अगराग लगाने वालियां हर समय राजकुमारी को घेरे रहतीं. कभी एक तरह के कपड़े पहनाकर देखे जाते और कभी दूसरी तरह के. कितनी ही तरह के हीरे-मोती जड़े हार और दूसरे गहने मंगवाए गए. राजकुमार के सामने कैसे जाना होगा, क्या बात करनी होगी और क्या नहीं कहनी होगी, यह सिखाने के लिए बड़ी चतुर राजकुल की स्त्रियां वहां आने लगीं.

जिस दिन राजकुमार बलवन्तसिंह वहां आने वाला था, उस दिन रानी राजलक्ष्मी ने दासियों को

सिखा-पढ़ाकर ऐसी व्यवस्था कर दी कि राजकुमारी इन्दुमती कहीं से भी पहनने के लिए अच्छे कपड़े प्राप्त न कर सके. रानी ने सोच लिया था कि इन्दुमती अपने फटे हुए और मैले कपड़ों में राजकुमार के सामने एक तो आएगी ही नहीं, यदि आएगी भी तो राजकुमार उसकी ओर देखकर मुंह फेर लेगा.

इन्दुमती सौतेली मां और बहन की सारी चालाकियों को खूब समझती थी पर दिनों का फेर होने से सब कुछ सह रही थी. उसके पिता ने ही उसे भुला दिया था, तो सौतेली मां को वह क्या कहे !

जब राजकुमार बलवन्तसिंह महल में आया तो रानी राजलक्ष्मी और तारामती ने उसका स्वागत किया. रानी और राजकुमारी दोनों बहुमूल्य गहनों-कपड़ों से सजी और लदी हुई थीं. इतने साज-शृंगार के बावजूद तारामती का चेहरा तो नहीं बदला जा सकता था. कहते हैं, चेहरा मन का दर्पण होता है. इतने सारे बहुमूल्य गहने-कपड़े भी तारामती के रूखे और चिड़चिड़े स्वभाव को नहीं छिपा सके. उसे

देखते ही युवराज बलवन्तसिंह समझ गया कि यह राजकुमारी मेरे मन की रानी नहीं बन सकती. जब युवराज ने तारामती को देखते ही मुंह फेर लिया तो रानी ने समझा कि शायद गहनों और कपड़ों की चमक-दमक से युवराज की आंख चुंधिया गई होगी. उसने सोचा, मेरी चांद-सी सुन्दर बेटी के चेहरे को देखकर युवराज की आंख झुक रह गई होगी. रानी और राजकुमारी तारामती राजकुमार के दाएं-बाएं चल रही थीं.

महल के एक अंधेरे कोने में बेचारी इन्दुमती दुःख में डूबी गुमसुम बैठी हुई थी. आज उसे अपनी मां का वियोग बुरी तरह सता रहा था. अचानक राजकुमार बलवन्त ने उसे देख लिया. फटे और मैले कपड़ों में भी वह गूदड़ी में लाल की तरह चमक रही थी. बलवन्त रानी के रोकने पर भी इन्दुमती के पास चला गया. इन्दुमती को देखते ही राजकुमार ठिठक गया. ऐसा सुन्दर लड़का उसने आज तक नहीं देखा था. इन्दुमती को भगवान् ने ऐसा रूप

दिया था और उसका भला स्वभाव उसके चेहरे पर ऐसा प्रतिबिम्बत था कि उसे न तो रेशमी कपड़ों की आवश्यकता थी और न रत्न-जड़े गहनों की. बढ़िया और मंहगे गहने-कपड़े पहनकर भी तारामती राजकुमारी बलवन्त को आकर्षित नहीं कर सकी और बिना गहनों-कपड़ों के भी इन्दुमती ने उसका मन मोह लिया.

जब राजकुमार इन्दुमती से बातें करने लगा तो रानी और तारामती जल-भुन गयीं. उनके किए-धरे पर पानी फिर गया. वे दोनों जिस बात को नहीं चाहती थीं, वही हुई. राजकुमार राजकीय मेहमान था. वे उसे रोक भी नहीं सकती थीं. नाराज भी नहीं करना चाहती थीं. जब राजकुमार इन्दुमती के पास बैठकर बातें करने लगा तो पहले तो वे मां-बेटी कुछ देर खड़ी रहीं कि राजकुमार उठ आएगा पर जब राजकुमार नहीं उठा तो बड़बड़ाती हुई दूसरी ओर चली गयीं.

उन्होंने राजा विजयसेन से इन्दुमती की चुगली

लगाई कि वह तारामती का रिश्ता राजकुमार बलवन्तसिंह से नहीं होने देना चाहती और स्वयं अपना विवाह उससे करना चाहती है. इसलिए कम से कम जितने दिन राजकुमार विजयनगर में रहे, उतने दिन इन्दुमती को एक कोठरी में कैद कर देना चाहिए ताकि वे एक-दूसरे से मिल न सकें. राजा ने अपनी स्वीकृति दे दी और मां-बेटी ने मिलकर इन्दुमती को एक कोठरी में बन्द करके दरवाजे पर ताला लगा दिया.

इन्दुमती यद्यपि निर्दोष थी तो भी सौतेली मां और बहन ने उसे कैद में डाल दिया था. वह सब कुछ समझ रही थी कि ऐसा क्यों किया गया है. उसे इस बात का बड़ा दुःख था कि अब वह राजकुमार बलवन्तसिंह के चेहरे की एक झलक भी नहीं देख सकेगी. वह मन ही मन राजकुमार को चाहने लगी थी.

राजकुमार को महलों के इस षड्यंत्र का कुछ भी पता नहीं था. इन्दुमती को उससे दूर रखने के लिए कैद कर दिया गया है, वह यह भी नहीं जानता था. रानी राजलक्ष्मी ने राजकुमार की सेवा और आदर-सत्कार के लिए कई राज-कर्मचारी लगा रखे थे. राजकुमार इन कर्मचारियों से इन्दुमती के रूप और गुणों का बार-बार बखान करने लगा. उधर रानी ने इन लोगों को समझा रखा था कि जिस तरह भी हो ऐसा प्रयत्न करना जिससे राजकुमार का मन इन्दुमती से फिर जाए. राज-कर्मचारियों को तो रानी की आज्ञा का पालन करना ही था. उनमें से एक बोला, "महामान्य युवराज महोदय, राजकुमारी इन्दुमती को जितना हम लोग जानते हैं, आप नहीं जान सकते. वह हमारे सामने जन्मी और बड़ी हुई है. यह ठीक है कि वह सुन्दर है किन्तु जब तक किसी में अच्छे गुण न हों, अच्छा रूप किसी काम का नहीं. राजकुमारी इन्दुमती का स्वभाव बहुत ही खराब है. वह कभी भी प्रसन्न—हंसती-मुसकाती दिखाई नहीं

देती."

दूसरा राजकर्मचारी बोला, "युवराज महोदय, मेरे साथी ने एकदम सच्ची बात कही है. मैं क्या बताऊं, वह बड़े ही कठोर स्वभाव की है और दासियों को बात-बात पर झिड़कती रहती है."

तीसरे राजकर्मचारी ने कहा, "अजी युवराज महाराज, उसे तो बात तक करने की तमीज नहीं है. वह न खाने का ढंग जानती है, न पहनने का. हमारे महाराज उसे कितना कुछ देते हैं कि राजकुमारियों की तरह शान से रहो पर वह ऐसी कंजूस है कि एक पैसा नहीं खर्चती और ग्वालिनों जैसी शकल-सूरत बनाए रहती है."

युवराज ने ये सारी झूठी बातें सुनीं. वह समझ गया था कि इन्दुमती के विरुद्ध कोई षड्यन्त्र किया जा रहा है. उसे उन राजकर्मचारियों पर क्रोध तो बहुत आया पर उसने उन्हें कुछ नहीं कहा. उसने मन में सोचा, जो कुछ ये कह रहे हैं, वह सब झूठ है, एकदम झूठ. उस जैसी भली और भोली राजकुमारी का

स्वभाव झगड़ालू, निर्दय और कठोर नहीं हो सकता. हां, यह सच है कि उसके कपड़े बहुत ही साधारण थे. राजकुमारियां वैसे कपड़े कभी नहीं पहनतीं पर जब मैंने उसे पहली बार देखा था तो वह मारे संकोच के धरती में गड़ी जा रही थी. फिर भी उसका बातचीत करने का ढंग बहुत ही बढ़िया और राजकुमारियों जैसा था. उसकी बातचीत से यह भी स्पष्ट था कि सौतेली मां ने उसे इस तरह के फटे और मैले कपड़े पहनने के लिए विवश किया हुआ था. और उस रानी ने ही इन राजकर्मचारियों को सिखा-पढ़ाकर इन्दुमती के विरुद्ध झूठी बातें कहने के लिए मेरे पास भेजा है ताकि मैं तारामती को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लूं. तारामती और उसकी मां इन्दुमती से खार खाती हैं.

जब राजकुमार इस तरह की बातें सोच रहा था तो राजकर्मचारियों ने देखा कि राजकुमार हमारी झूठी बातों के कारण कुछ नाराज है. उन राज-कर्मचारियों का मुखिया जो उनसे ज्यादा चालाक

था, राजकुमार के मन की बात का पता लगाने के लिए बोला, "महामान्य युवराज महोदय! मेरे साथियों ने जो कुछ कहा है, मैं उससे सहमत नहीं हूं. मैंने तो देखा है कि राजकुमारी इन्दुमती जितनी सुन्दर है, उतनी ही सुशील भी है. नौकरों-चाकरों के साथ भी उसका व्यवहार दयालुतापूर्ण है. हां, वह यदि गहने-कपड़ों में व्यर्थ का खर्च नहीं करती तो यह उसकी अपनी मर्जी है उसे अधिकार है कि वह चाहे जैसे गहने-कपड़े पहने."

उस राजकर्मचारी की बात सुनते ही राजकुमार का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा. वह उस कर्मचारी से फिर इन्दुमती के रूप और गुणों की प्रशंसा करने लगा.

राजकर्मचारियों के मुखिया को राजकुमार के मन की बात का पता लग गया. उसे पक्का विश्वास हो गया कि राजकुमार इन्दुमती को चाहने लगा है.

उसने रानी राजलक्ष्मी को सारी बात बता दी. राजकुमार के इन्दुमती को चाहने की बात सुन-

कर रानी को बड़ी चिन्ता हुई.

उधर इन्दुमती कैद में पड़ी-पड़ी सोच रही थी कि न जाने आगे क्या होने वाला है. रानी उसके लिए एक समय रूखा-सूखा खाना और एक लोटा पानी भेज देती थी. इन्दुमती को दोबारा राजकुमार बलवन्तसिंह से मिलने की आशा तो कतई थी ही नहीं, यह भी भय था कि कहीं सारी उमर इस काल-कोठरी में ही न काटनी पड़े.

इन्दुमती के साथ किसी को बात करने तक की आज्ञा नहीं थी. इन्दुमती सोचती कि इस जीने से तो मर जाना अच्छा. पर उसे फिर खयाल आता कि हो सकता है, मेरे दिन फिरें और मैं पतिरूप में राजकुमार को पा सकूं. वह कैद में पड़ी-पड़ी रोती-बिलखती रहती. पहरेदारों को उसकी हालत पर बड़ा तरस आता, पर वे करते तो क्या करते.

उधर रानी राजलक्ष्मी को पूरा-पूरा भरोसा था कि राजकुमार तारामती से विवाह करना स्वीकार कर लेगा. वह प्रतिदिन राजकुमार के लिए नई-नई

कीमती चीजों की भेंट भेजती. राजकुमार के सम्मान में राज्य की ओर से स्वागत-समारोह का आयोजन किया गया.

इतना कुछ करने पर भी राजकुमार का मन नहीं बदला वह रानी और तारामती दोनों से दूर रहने का प्रयत्न करता. उपहार और भेंट में जो बहुमूल्य चीजें मिलतीं, उन्हें भी बड़ी लापरवाही से स्वीकार करता.

एक दिन तारामती ने रंग-बिरंगे फूलों की एक बड़ी सुन्दर माला राजकुमार को भेजी. माला ले जाने वाली दासी ने राजकुमार से कहा, "यह माला आपके लिए राजकुमारी ने भेजी है."

राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ और बोला, "अच्छा, तो यह माला राजकुमारी इन्दुमती ने मेरे लिए भेजी है."

दासी ने कहा, "महामान्य राजकुमार जी ! यह माला इन्दुमती ने नहीं, तारामती ने भेजी है."

राजकुमार ने कहा, "अच्छा, यह बात है ! तो

राजकुमारी तारामती ने यह माला भेजी है. किन्तु मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता; क्योंकि हमारे यहां के रिवाज के अनुसार माला उसी राजकुमारी को स्वीकार की जा सकती है, जिसके साथ विवाह होना निश्चित हो गया हो. मैं यह सब अपनी ही इच्छा से नहीं कर सकता. मुझे अपने पूज्य पिता से भी स्वीकृति लेनी होगी."

इस तरह बहाना बनाकर राजकुमार ने वह माला वापस लौटा दी. दासी राजकुमार के मन की बात समझ गई और चुपचाप लौट गई. वह भीतरी मन से तो प्रसन्न थी कि राजकुमार ने तारामती से विवाह करना अस्वीकार कर दिया है पर जब महल में रानी के पास पहुंची तो ऐसा मुंह बना लिया जैसे उसे इस बात का बड़ा दुःख हो. रानी ने जब सुना कि राजकुमार ने माला लौटा दी है तो सन्न रह गई. उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया.

राजकुमार बीच-बीच में राजा-रानी से मिलने उनके महल में जाता रहता उसके वहां जाने का एक उद्देश्य यह भी होता कि सम्भव है, वहां इन्दुमती से भेंट हो जाए. उसकी आंखें इधर-उधर इन्दुमती को खोजतीं किन्तु वह कहीं दिखाई नहीं देती. राजकुमार निराश लौट आता.

रानी सब कुछ समझ रही थी. वह राजकुमार के साथ इधर-उधर की कितनी ही बातें करती रहती. उसकी हर बात का राजकुमार 'हां','हूं' में उत्तर देता और कभी-कभी तो ऐसा भी होता कि जहां 'न' कहना होता वहां 'हां' कह जाता. कारण स्पष्ट है. राजकुमार का ध्यान रानी की बातों की ओर तो होता नहीं, वह तो इन्दुमती के ध्यान में ही खोया रहता.

एक दिन राजकुमार ने रानी से पूछ ही लिया कि राजकुमारी इन्दुमती कहां है ?

रानी ने चिढ़कर उत्तर दिया,"महाराज ने उसे अपने कमरे से निकलने की मनाही कर दी है."

"किसलिए ?" राजकुमार ने पूछा.

"इसलिए कि उसका पहनावा और व्यवहार राजकुमारियों के योग्य नहीं है. हमारे यहां आने वाले मेहमान उसे देखकर हमारे राज्य के बारे में अच्छी राय नहीं बनाएंगे."

"यह तो बहुत बुरी बात है. ऐसी सुन्दर और सुशील राजकुमारी को कैद में रखना तो एकदम अनुचित है."

रानी जो राजकुमार की ओर से निराश हो चुकी थी बोली, "यह हमारे घर का मामला है. आपको इसमें दखल नहीं देना चाहिए. महाराज ने कुछ सोच-समझकर ही ऐसा किया होगा."

राजकुमार ने इस उत्तर से अपने को अपमानित अनुभव किया उसे लगा कि रानी का अब तक का व्यवहार नकली था और अब उसने अपना असली रूप प्रकट किया है. दोनों मां और बेटी का असली स्वभाव प्रकट हो गया था. उसने तारामती की ओर घूरकर देखा और वहां से उठकर अपने महल में चला गया.

महल में पहुंचकर राजकुमार ने जिस किसी तरह इन्दुमती से मिलने का निश्चय किया. अपने साथ आए मंत्री के पुत्र से उसने कहा, "चाहे जितना खर्च करना पड़े, कैद में पड़ी इन्दुमती से मिलने की व्यवस्था करो. वहां जो लोग पहरा देते हैं, उन्हें कुछ देकर फुसलाओ."

वे आपस में बातें कर ही रहे थे कि महल की एक दासी ने सुन लिया. वह राजकुमार के पास जाकर बोली कि मैं आपको राजकुमारी इन्दुमती से मिला सकती हूं."

राजकुमार बलवन्तसिंह ने अपना मोतियों का हार उतारकर उस दासी को दे दिया. दासी ने कहा कि आज रात के पहले पहर में आपको राजकुमारी इन्दुमती से मिला सकती हूं. आप बाग के पास वाले महल में आ जाएं. महल के उस कमरे की एक खिड़की बाग की ओर खुलती है जिसमें राजकुमारी को बन्द करके रखा गया है. आप खिड़की के पास पहुंच जाएं. राजकुमारी खिड़की खोलकर आपसे बात

कर लेगी. दासी ने राजकुमार को सावधान कर दिया कि दूसरे किसी को साथ न लाए और लुकता-छिपता बाग में पहुंचे. यदि राजा-रानी को इस बात की जरा भी खबर मिल गई तो राजकुमार, राजकुमारी इन्दुमती और दासी—तीनों के प्राण संकट में पड़ जाएंगे.

राजकुमार बड़ा प्रसन्न हुआ. कई दिनों बाद आज वह इन्दुमती से दो बातें कर सकेगा और उसे देख सकेगा.

सच तो यह था कि यह दासी रानी की जासूस थी और राजकुमार पर नजर रखने के लिए, टहल-सेवा के बहाने यहां भेजी गई थी. राजकुमार उसके जाल में फंस गया था. उस दासी ने सारी बात रानी को बता दी. फिर उसने रानी से पूछा कि अब क्या करना चाहिए. रानी ने थोड़ी देर तक सोच-विचार किया और पूरी योजना बना डाली.

रानी ने तारामती को बाग वाले महल के उस कमरे में भेज दिया जिसकी खिड़की बाग की ओर

खुलती थी. रानी ने राजकुमारी तारामती को अच्छी तरह समझा दिया कि उसे क्या कहना है और क्या करना है. इस तरह राजकुमार को धोखा देने के लिए राजकुमारी इन्दुमती के बदले वहां तारामती जा बैठी और उसने अपने को इन्दुमती के रूप में दिखाने का प्रयत्न किया.

निश्चित समय पर राजकुमार महल की बाग में खुलने वाली खिड़की के पास जा पहुंचा. रात एकदम अंधेरी थी, और कोई देख न ले, इस डर से भी कमरे में दीपक को बुझा दिया गया. खिड़की में राजकुमारी तारामती बैठी थी और राजकुमार समझ रहा था कि इन्दुमती है. वे दोनों कुछ देर तक धीरे-धीरे बातें करते रहे. अंधेरे में राजकुमार को राजकुमारी का मुंह तो दिखाई देता नहीं था कि वह उसे पहचान ले. बातें भी दोनों फुसफुसाकर कर रहे थे ताकि कोई सुन न ले. इसलिए जबान से पहचानने का भी प्रश्न नहीं उठता था. राजकुमार केवल पहले एक बार ही इन्दुमती से मिला

था.

इन्दुमती बनी हुई तारामती ने राजकुमार से कहा, "मैं ससार भर में सबसे अभागी राजकुमारी हूं जो मुझे यहां कैद कर दिया गया है. मुझे लगता है कि मैं सारी उमर इसी कैद में घुल-घुलकर मर जाऊंगी. जब तक तारामती का विवाह नहीं हो जाएगा, मुझे यहां से छोड़ा नहीं जाएगा."

राजकुमार बलवन्तसिंह तो उसे इन्दुमती ही समझे हुए था. वह बोला, "तुमने मेरा दिल जीत लिया है. जिस दिन मेरा और तुम्हारा विवाह होगा, वह मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रसन्नता का दिन होगा. तुम मेरे राज्य की भी और मेरे हृदय की भी रानी बनोगी. भगवान करे, वह दिन जल्दी आए और हम सुख से रहें." फिर राजकुमार ने अपनी अंगुली से अंगूठी उतारकर राजकुमारी को पहना दी. उसने कहा, "मेरी निशानी के रूप में तुम इस अंगूठी को अपने पास रखो. मैं शीघ्र ही तुम्हें इस कैद से छुड़ाकर अपने राज्य में ले जाऊंगा और हम

दोनों विवाह करके सुख-चैन से रहेंगे."

राजकुमार की सारी बातों के उत्तर तारामती ने अपनी समझ के अनुसार बड़े अच्छे ढंग से दिए पर अकल तो न उधार मिलती है, न बाजार में मिलती है राजकुमार ने सोचा, बेचारी राजकुमारी कैद में बहुत दुःखी है, इसलिए इसकी अकल मारी गयी है. इसलिए वह अपनी बुद्धिमता का परिचय नहीं दे सकी. खैर, कोई बात नहीं. सब कुछ ठीक हो जाएगा.

राजकुमार ने अगली रात को भी उसी समय आने का वायदा किया और राजकुमारी की प्रतीक्षा करने को कहा. उनकी योजना थी कि यहां से चुपचाप भाग निकलेंगे. राजकुमारी ने इस पर प्रसन्नता प्रकट की और राजकुमार वापस महल में लौट आया.

तारामती ने रात की सारी बातें अपनी रानी मां को बताईं. राजकुमार को सफलतापूर्वक धोखा देने के लिए रानी ने तारामती की पीठ थपथपायी.

सारा घटनाचक्र वैसे ही चल रहा था जैसे

रानी और राजकुमारी तारामती चाहती थीं.

निश्चत समय पर राजकुमार खिड़की के पास जा पहुंचा. वह अपना उड़नखटोला साथ लाया था ताकि उस पर बैठकर दोनों भाग निकलें और किसी को कुछ पता भी न चले. रानी सब कुछ जानती थी और एक तरह से जो कुछ हो रहा था, उसकी इच्छा से हो रहा था. उसने ऐसी व्यवस्था कर दी थी कि तारामती के वहां से भाग निकलने में किसी तरह भी रुकावट पैदा न हो.

अंधेरी रात में हाथ को हाथ नहीं सूझता था. राजकुमारी खिड़की में से कूदकर कैद से बाहर आयी. राजकुमार ने उसे सहारा देकर उड़नखटोले पर बिठाया और उड़नखटोला उड़ चला.

उड़नखटोले में बैठे-बैठे दोनों में बातें होने लगीं. राजकुमारी ने कहा, "हमें सबसे पहले विधिपूर्वक विवाह करना चाहिए." राजकुमार ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया तो राजकुमारी ने कहा, "यहां से कुछ दूर मेरी धर्ममाता रहती है. हम उड़न

खटोले को उसके यहां ले चलें और वहीं विवाह भी करें."

राजकुमार ने यह बात मान ली और उड़न-खटोले को, राजकुमारी की धर्ममाता, जो एक जादूगरनी थी, के किले में जा उतारा.

बात यह थी कि तारामती जानती थी कि सवेरा होते ही, ज्यों ही राजकुमार मेरा चेहरा देखेगा, झट समझ जाएगा कि यह तो तारामती है. तब वह विवाह करने से इनकार कर देगा. उस समय मेरी धर्ममाता अपने जादू के प्रभाव से राजकुमार को विवाह करने पर विवश कर सकेगी.

उड़नखटोला जब जादूगरनी के किले में उतरा तो किला दीवाली की रात की तरह दीपों से जगमगा रहा था. वहां पहुंचते ही तारामती ने अपना घूंघट हटा लिया. वह समझती थी कि अब राजकुमार उससे विवाह करने से इनकार नहीं कर सकेगा. ज्यों ही उसने घूंघट हटाया, दीपों के जगमग प्रकाश में राजकुमार ने उसे पहचान लिया कि यह

इन्दुमती नहीं, तारामती है. तारामती अपनी जादूगरनी धर्ममाता से अकेले में मिली और उसे सारी बातें बता दीं कि किस तरह राजकुमार को धोखा देकर वह यहां ले आयी है. उसने जादूगरनी से प्रार्थना की कि अब वह किसी तरह राजकुमार को समझा-बुझाकर विवाह करने के लिए राजी कर ले.

जादूगरनी ने सोचकर कहा, "प्यारी धर्मपुत्री ! तू इस काम को जितना आसान समझ रही है, यह उतना आसान है नहीं. फिर भी मैं पूरा प्रयत्न करूंगी कि तुम्हारा मनचाहा हो जाए. राजकुमार को इन्दुमती के गुणों ने मोह लिया है. वह आसानी से मानेगा नहीं. उसे डरा-धमकाकर अपनी बात मनवानी पड़ेगी."

उधर वे दोनों आपस में बातें कर रही थीं और इधर राजकुमार बैठा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था. उसने देखा कि इस महल की दीवारें शीशे की हैं और उनमें जगह-जगह हीरे और लाल जड़े हुए हैं. उसे शीशे की दीवार के उस ओर बातें करती

राजकुमारी और जादूगरनी साफ दिखाई दे रही थीं. उसे भ्रम होने लगा कि शायद वह सोया हुआ है और सपना देख रहा है, क्योंकि ऐसा विचित्र महल न तो उसने कभी देखा था और न सुना था. फिर उसने सोचा, 'मेरे साथ छल हुआ है. हमारी शत्रु इस तारामती को किसी जादू की शक्ति ने यहां पहुंचा दिया है या यह स्वयं जादू जानती है. मेरे और इन्दुमती के विवाह को रोकने के लिए शायद यह षड्यन्त्र रचा गया है. इन्दुमती तो कहीं दिखाई नहीं देती ! क्या राजा को भागने की हमारी योजना का पता लग गया था ?' तरह-तरह के विचार राजकुमार के मस्तिष्क में आने लगे. वह उदास हो गया. उसके सारे किए-कराए पर पानी फिर गया था. निराशा से उसका चेहरा लटकने लगा. इतने में जादूगरनी और तारामती दोनों उसके पास आ गयीं. जादूगरनी ने बड़े रौब के साथ कहा, "राजकुमार बलवन्त ! यह तारामती यहां खड़ी है, जिसके साथ विवाह करने का तुमने वचन दिया था और

अपनी निशानी के रूप में अपनी अंगूठी उसे उपहार में दी थी. यह मेरी धर्मपुत्री है यह तुम्हें उसने बता दिया है. मैं चाहती हूं कि तुरन्त तुम दोनों का विवाह हो जाए. बोलो, तुम क्या कहते हो ?"

"मैंने इसके साथ विवाह करने का वचन कभी नहीं दिया. अगर इसने तुमसे यह बात कही है, तो झूठ बोला है. मैं इसके साथ विवाह करने के लिए बिलकुल तैयार नहीं हूं. मैं तुम्हारे या किसी और के कहने से अपने मन को नहीं बदल सकता."

"चुप रहो, बक-बक मत करो !" राजकुमार को झिड़कते हुए जादूगरनी ने कहा, "बड़ों के साथ किस तरह बात की जाती है, तुम्हें इसकी भी तमीज नहीं. सभ्य ढंग से बात करो. समझे !"

"मैं तुम्हारा पूरा आदर-सत्कार कैसे करूं. तुम झूठ बोल रही हो और मुझसे धोखा देनेवाली इस तारामती की सहायता कर रही हो. हां, अगर तुम राजकुमारी इन्दुमती से मेरा विवाह करा दो तो मैं समझूंगा कि तुम आदर-सत्कार के योग्य हो."

यह सुनते ही राजकुमारी तारामती गुस्से से बोली, "अरे धोखेबाज ! क्या मैं तुम्हारी कोई नहीं हूं ? ऐसी ही बात थी तो तुमने खिड़की के पास अपने अमर प्रेम की निशानी के रूप में यह अंगूठी मुझे क्यों दी थी ? क्यों मेरे साथ वहां घुल-घुलकर बातें करते रहे ? क्यों तुम मुझे वहां से भगाकर यहां लाए ? बोलो, मेरी बात का उत्तर दो."

"मुझे छला गया था. तुमने षड्यन्त्र रचा और मुझे धोखा दिया." राजकुमार ने क्रोध में उबलते हुए उत्तर दिया.

राजकुमार ने सोचा कि यहां रहना खतरे से खाली नहीं है. वह तेजी से अपने उड़नखटोले की ओर भागा. किन्तु ज्यों ही वह कुछ कदम चला, जादूगरनी ने अपने जादू के डंडे से उसे छूआ और उसके लिए एक कदम भी आगे बढ़ना असम्भव हो गया. जादूगरनी उसे डांटते हुए बोली, "तुम मेरी आज्ञा के बिना यहां से नहीं जा सकते."

राजकुमार के पांव जादू की शक्ति से आगे नहीं

बढ़ पा रहे थे. फिर भी वह बोला, "तुम मुझे यहां रोक सकती हो, कैद कर सकती हो और मार भी सकती हो. किन्तु एक बात याद रखो, मेरे मन को नहीं बदल सकतीं. मैं तुम्हारी इस धर्मपुत्री से विवाह नहीं करूंगा, नहीं करूंगा. मेरा विवाह होगा तो इन्दुमती से. तुम अपने जादू के जोर से जो चाहो करो."

जादूगरनी ने समझा-बुझाकर, डरा-धमकाकर, शक्ति और सम्पत्ति का लालच देकर, राजकुमार को तारामती से विवाह करने को राजी करना चाहा, पर वह टस से मस नहीं हुआ. तारामती ने रोकर, उसके पांवों में पड़कर, गिड़गिड़ाकर उसे मनाना चाहा पर राजकुमार पर इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा. खाना-पीना और सोना छोड़कर तीन दिन और तीन रात जादूगरनी और तारामती राजकुमार को मनाने का प्रयत्न करती रहीं, पर वह नहीं माना. अन्त में निराश होकर जादूगरनी बोली, "अगर तू अपनी जिद्द नहीं छोड़ता है, तो

मेरी अन्तिम चेतावनी सुन ले—या तो तू तारामती से विवाह कर ले या फिर विवाह का वचन तोड़ने के अपराध में सात साल का दण्ड भोगो. मैं तुम्हें नीलकंठ पंछी बनाकर छोड़ दूंगी. तुम सात साल तक पंछी रहोगे. बोलो, क्या चाहते हो ?"

"पंछी बनना." राजकुमार ने कहा.

"ठीक है. जाओ, सात साल तक पंछी का जीवन बिताओ," और जादूगरनी के यह कहते ही राजकुमार नीलकंठ पंछी बन गया. पंछी बनते ही वह तुरन्त उस महल से उड़ चला. वह जादूगरनी के प्रभाव से पक्षी तो बन गया पर मनुष्य जैसी बोली वह अब भी बोल सकता था. राजकुमार बलवन्तसिंह को जादूगरनी की कैद से छूट जाने की प्रसन्नता के साथ-साथ पंछी बन जाने का दुःख भी कम नहीं था वह मीलों उड़ता चला गया. जब थक गया तो सुस्ताने बैठा. वह अब भी इन्दुमती के लिए चिन्तित था और वह कहां होगी, कैसी होगी, यही सोच रहा था. रानी ने उसे मार तो नहीं डाला होगा ? अब

वह मुझे मिलेगी भी या नहीं ? मैं सात साल तक उसके बिना कैसे जीवित रहूंगा और इसके बाद भी वह मिल जाएगी, इसी बात का क्या भरोसा.

उधर से जादूगरनी ने तारामती को वापस विजयनगर भेज दिया. रानी भी तारामती के लिए चिन्तित थी. वह जानना चाहती थी कि उनका विवाह कहां, कब और कैसे हुआ पर जब उसने तारामती से सारी बात सुनी तो बड़ी दुःखी हुई. उसका सारा छल-कपट बेकार गया था. वह तारामती को साथ लेकर इन्दुमती के पास गयी. तारामती ने विवाह के कीमती गहने-कपड़े पहन रखे थे. उसके हाथ-पैर मेंहदी से रंगे हुए थे. सिर पर उसने रानियों वाला मुकुट पहन रखा था. उसने उंगली में वह अंगूठी पहन रखी थी जो राजकुमार ने अपने प्रेम की निशानी के रूप में, उसे इन्दुमती समझकर दी थी.

इन्दुमती की नजर उस अंगूठी पर पड़ी. यह

अंगूठी उसने पहले राजकुमार की अंगुली में देखी थी. उसे बड़ा आश्चर्य हुआ. तारामती को दुलहिन के पहनावे में देखकर वह पहले ही चक्कर में पड़ी हुई थी.

रानी राजलक्ष्मी ने कहा, "इन्दु ! तारा का विवाह तो हो गया. वह देखो, राजकुमार बलवन्त ने उसे अपनी अंगूठी दी है और भी ढेरों गहने-कपड़े और दूसरी चीजें हैं. क्या-क्या गिनाऊं."

मां-बेटी दोनों ने इन्दुमती को चोट पहुचाने के लिए ही यह सब किया था. उन्हें इसमें सफलता भी मिली. इन्दुमती ने उनकी सब बातों को सच समझा और मन में दुःखी हुई. उसे अपना जीवन व्यर्थ लगने लगा.

इन्दुमती के जी को जलाकर रानी बड़ी प्रसन्न हुई और तारामती सहित महल में लौट आयी. उधर राजा विजयसेन से जाकर चुगली लगा दी कि इन्दुमती तो राजकुमार बलवन्तसिंह के लिए व्याकुल हो रही है और एकदम मूर्खों जैसा आचरण

कर रही है. मुझे डर है कि वह कहीं भाग न जाए, इसलिए मैंने पहरा बिठा दिया है.

राजा ने कहा, "तुमने जो कुछ किया, बहुत अच्छा किया. मुझे तो राजकाज से ही समय नहीं मिलता. तुम जैसा उचित समझो वैसा करो."

उधर इन्दुमती को रात को भी नींद नहीं आयी. वह समझ नहीं पा रही थी कि राजकुमार ने तारामती से विवाह करना कैसे स्वीकार कर लिया. वह दुःखी और बेचैन थी. वह खिड़की के पास बैठी अपने ही विचारों में खोयी हुई थी. वह रात-भर रोती-बिलखती रही. जब प्रभात के सूर्य की किरणें खिड़की पर पड़ीं तो उसने खिड़की बन्द कर दी और भीतर औंधे मुंह लेटकर रोती रही. वहां कोई उसे चुप कराने वाला नहीं था. भूख-नींद उसे छोड़ गयी थी. जब रात हुई तो फिर उसने खिड़की खोल दी और वहां बैठकर कभी रोती, कभी सोचती और कभी

अपनी मौत के लिए भगवान् से प्रार्थना करती. यह रात भी इसी तरह रोते-रोते बीत गयी और सवेरा होने पर वह खिड़की बन्द करके कमरे में रोते-बिलखने लगी.

अब तक उड़ता-उड़ता नीलकंठ भी वहां आ पहुंचा. वह महल के चारों ओर चक्कर काटने लगा ताकि उसे कहीं इन्दुमती दिख जाए. उसे इतना तो पता था ही कि राजकुमारी यहीं किसी कमरे में कैद है. वह एक-एक खिड़की के पास जाकर बैठता ताकि पता चल सके कि कमरे के भीतर कौन है. वह निडर होकर तो किसी खिड़की के पास जा नहीं सकता था, क्योंकि तारामती को उसके नीलकंठ पंछी बन जाने का पता था. अगर वह देख लेती तो पंछी पकड़ने वालों को कहकर उसे पकड़ मंगवाती और पिंजरे में बन्द कर देती या पंख नोच डालती या फिर गर्दन मरोड़ डालती. इसलिए नीलकंठ बड़ी सावधानी के साथ इन्दुमती को खोज रहा था. जिस कमरे में इन्दुमती कैद थी, उसकी खिड़की के बाहर

ही एक सफेदे का पेड़ था. नीलकंठ शाम को उस पेड़ की एक टहनी पर आ बैठा. रात होने पर इन्दुमती ने खिड़की खोली और वहां बैठकर आंसू बहाती अपने भविष्य के बारे में सोचने लगी. अपने आप से बातें करते हुए वह बोली 'हाय! मुझे मौत भी नहीं आती! अब मैं जीवित रहकर भी क्या करूंगी. मैं राजकुमार के लिए वर्षों ये दुःख बड़ी खुशी के साथ सह सकती थी पर अब तो उसकी भी आवश्यकता नहीं रही.'

नीलकंठ उसकी एक-एक बात को ध्यान से सुनता रहा. उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा. उसे क्या पता था कि जादूगरनी के पास से लौटकर तारामती और उसकी मां ने क्या नाटक रचा था.

नीलकंठ ने सोचा कि मैं सवेरे राजकुमारी के कमरे में जाकर सारी बात पूछूंगा कि सवेरा होते ही राजकुमारी ने खिड़की बन्द कर ली और फिर दिन-भर नहीं खोली.

नीलकंठ वहां से उड़कर दिनभर इधर-उधर

उड़ता रहा और सांझ होते ही उसी डाल पर आ बैठा. उस दिन पूर्णिमा का चन्द्रमा अपनी चांदनी छिटका रहा था. खिड़की में बैठी इन्दुमती का चेहरा चांदनी में स्पष्ट दिखायी दे रहा था. राजकुमारी चिन्ता में घुलती हुई अपने आप से ही कह रही थी, 'हाय रे भाग्य ! मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था जो मुझे कैद में घुट-घुटकर मरने के लिए छोड़ दिया गया है. कोई दिन थे, जब मेरे पिता मुझसे कितना प्यार करते थे. और आज कोई मेरी बात सुनने वाला भी नहीं है.'

नीलकण्ठ ने मनुष्य की बोली में कहा, "प्यारी राजकुमारी इन्दुमती ! क्या कारण है कि तुम उदास और बेचैन हो ? तुम्हारा दुःख दूर हो सकता है."

इन्दुमती ने सहानुभूति के ये शब्द सुने तो देखने लगी कि यह कौन बोल रहा है. पर वहां कोई उसे दिखाई नहीं दिया. उसके आश्चर्य की सीमा न रही कि रात को यह कौन है जो मुझे धीरज बंधा

रहा है. वह बोली—"यह कौन मेरा शुभ-चिन्तक है ?"

राजकुमार ने कहा, "एक अभागा राजकुमार ! वह राजकमार जो तुम्हें हृदय से चाहता है. वह केवल तुम्हारा है." यह कहते हुए नीलकंठ उठा और खिड़की पर जा बैठा.

रात के सन्नाटे में नीलकण्ठ के पर फड़फड़ाने के शब्द से राजकुमारी घबरा गई. फिर मनुष्य की बोली बोलते उस पंछी को देखकर तो वह एकदम चकित रह गयी.

नीलकंठ बोला, "घबराओ मत. मैं वही राजकुमार बलवन्तसिंह हूं. तारामती की जादूगरनी धर्ममाता ने मुझे पंछी बना दिया है यह तारामती से विवाह न करने का दण्ड है जिसे मैं सात साल तक भुगतूंगा." फिर उसने दासी द्वारा ठगे जाने, तारामती को इन्दुमती समझकर अंगूठी देने, विजयनगर से भागने और जादूगरनी के किले में पहुंचने और तारामती से विवाह करने के लिए जोर डालने आदि सारी

कहानी कह सुनाई.

वह कहानी सुनकर इन्दुमती को प्रसन्नता भी हुई और दुःख भी प्रसन्नता इस बात को कि राजकुमार ने किसी शर्त पर भी तारामती से विवाह करना स्वीकार नहीं किया और वह अब भी इन्दुमती को ही चाहता है. दुःख यह कि राजकुमार सात वर्ष के लिए पंछी बन गया है और इस पंछी की जान पर कोई भी संकट आ सकता है.

नीलकंठ भी राजकुमारी इन्दुमती से मिलकर बहुत प्रसन्न था पर उसे कैद में पड़ा देखकर उसे दुःख भी कम नहीं था.

इन्दुमती ने नीलकण्ठ के डैनों पर प्यार से हाथ फेरा. इन्दुमती को यह जानकर कि राजकुमार ने मेरे लिए सात साल तक पंछी बनकर रहना स्वीकार कर लिया किन्तु तारामती के साथ विवाह करना स्वीकार नहीं किया, अत्यन्त प्रसन्नता हुई .राजकुमार के इस त्याग ने राजकुमारी की नजरों में उसका महत्त्व और भी बढ़ा दिया. राजकुमारी ने कहा,

"तुमने मेरे लिए पंछी बनकर रहना स्वीकार कर लिया है तो मैं भी तुम्हारे लिए दुनिया का बड़े से बड़ा दुःख सहन कर सकती हूं. मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में इन सात सालों को सात दिनों की तरह प्रसन्नता से काट लूंगी."

सूर्य निकलने को था. नीलकण्ठ उड़कर बाहर चला गया और राजकुमारी ने खिड़की बन्द कर ली. नीलकण्ठ ने रात को फिर आने का वायदा किया.

फिर रोज रात को नीलकण्ठ खिड़की के भीतर आ जाता और वे दोनों रात-भर बातें करते रहते. वे दोनों दुःखी होकर, रोज मिलने से सुखी थे. वे भगवान का लाख-लाख धन्यवाद करते कि दुःख के इन दिनों में वे दोनों इकट्ठे रह लेते हैं और एक-दूसरे के दुःख को दूर करते हैं.

अब इन्दुमती को दिन-रात इस बात की चिन्ता लगी रहती कि नीलकण्ठ पर कोई संकट न आ जाए. पंछी की नन्ही जान को तो सौ तरह के संकट रहते हैं. बाज जैसे पंछी से डर, चिड़ीमारों का डर, गोली-

गुलेल का डर. अगर वह मनुष्य के रूप में होता, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता था. पर एक पंछी की क्या बिसात ! अगर उसको कुछ हो गया तो उसका क्या बनेगा ! यह सोच-सोचकर उसे दिन को भी नींद न आती और वह सांझ होते ही नीलकण्ठ के आने की प्रतीक्षा करने लगती. वह खिड़की को खोल वहां आ बैठती और नीलकण्ठ के आने में क्षणभर भी देर होने पर व्याकुल हो जाती और सोचती कि उसे कहीं कुछ हो न गया हो.

नीलकण्ठ भी भूख मिटाने के लिए थोड़े से कीड़े आदि चुगकर एक पेड़ के खोखले में आ बैठता और दिन भर राजकुमारी के बारे में सोचता रहता. वह इन्दुमती को प्रसन्नता के लिए कुछ करना चाहता था. एक दिन उसने निश्चय किया कि वह अपने राज्य में जाएगा. वह उड़ा और महल पर जा बैठा. वह एक रोशनदान के रास्ते कमरे में जा पहुंचा. वहां से उसने हीरे जड़े दो कर्णफूल चोंच से उठाए और फिर उड़कर इन्दुमती के पास आ गया. सांझ

हो रही थी, वह खुली खिड़की में से भीतर चला गया और वे हीरे के कर्णफूल इन्दुमती को दे दिए. उसने इन्दुमती को कहा कि वह इन्हें अपने कानों में पहन ले.

इन्दुमती ने बड़ी प्रसन्नता के साथ वे कर्णफूल पहन लिए, पर वह बोली, "तुम दिन में तो यहां आओगे नहीं, इसलिए इन्हें पहनकर मैं कैसी लगती हूं, यह भी नहीं देख सकोगे. फिर इन्हें पहनने का लाभ ही क्या!"

नीलकण्ठ ने कहा, "तुम दिन में जिस समय भी मुझे आने को कहो, मैं आ सकता हूं."

यह रात भी दोनों ने बातों-बातों में बिता दी. सवेरा होते ही नीलकण्ठ उड़ गया और राजकुमारी ने खिड़की बन्द कर ली.

दूसरे दिन नीलकण्ठ फिर लम्बी उड़ान भरकर अपने राज्य में चला गया और अपने महल में जा पहुंचा. फिर पिछले दिन की ही तरह रोशनदान से अपने कमरे में जा घुसा और कंगनों की एक जोड़ी

चोंच में उठा लाया. इन कंगनों में हीरे-लाल जड़े हुए थे. वह सांझ को फिर इन्दुमती के पास जा पहुंचा और कंगन उसे दे दिये. कंगनों को लेकर इन्दुमती ने कहा, "प्यारे राजकुमार! क्या तुम समझते हो कि हम दोनों का प्रेम तुम्हारे इन उपहारों से और भी दृढ़ होगा! प्रिय! सच्चा प्रेम किसी भी भेंट-उपहार को चाह नहीं करता. मैं नहीं चाहता कि कोई तुम्हारी चोंच में इन कीमती गहनों को देखकर तुम्हारी जान का गाहक बन जाए. व्यर्थ में अपने को संकट में मत डालो. मुझे तुम्हारे सिवा किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है."

नीलकण्ठ ने कहा, "मैं जानता हूं और मानता हूं कि तुम्हें इन उपहारों की कतई आवश्यकता नहीं है. बस, तुम्हारे लिए कुछ करके मुझे प्रसन्नता होती है. ये उपहार मेरे प्रेम के प्रतीक हैं. यही समझकर तुम इन्हें स्वीकार करो. मना करती हो तो मैं भविष्य में नहीं लाऊंगा." किन्तु दूसरी रात को जब इन्दुमती ने नीलकण्ठ से कहा कि सांझ को तुम्हारी प्रतीक्षा

करते-करते मैं बेचैन हो जाती हूं और तुम आने में बहुत देर कर देते हो. मेरा मन तुम्हारे बारे में ऊट-पटांग बातें सोचता रहता है तो नीलकण्ठ ने सोचा कि यदि राजकुमारी को एक घड़ी लाकर दे दी जाए तो उसे समय जानने में सुविधा होगी और वह यों ही मेरी प्रतीक्षा में बेचैन नहीं रहा करेगी. वह लंबी उड़ान उड़ा और अपने महल से एक बहुत ही छोटी घड़ी उठा लाया और इन्दुमती को दे दी.

इस घड़ी को पाकर इन्दुमती बड़ी प्रसन्न हुई. अब वह घड़ी देखकर, ठीक समय पर खिड़की खोलती और उसी निश्चित समय पर नीलकण्ठ भी आ जाता. जब रात को वे दोनों मिल बैठते तो उनकी बातें ही समाप्त नहीं होतीं. समय इतनी तेजी से बीतता मालूम पड़ता कि जैसे बारह घंटों की रात चार घंटों में बीत गयी हो. और जब दिन में दोनों अलग-अलग होते तो बारह घंटों का दिन बीस घंटों जितना लम्बा लगता. सुख की घाड़यां जल्दी बीतती हैं और दुःख की देर से.

दिन निकलते ही नीलकण्ठ उड़ गया और पेड़ के खोखले में जा बैठा.

राजकुमारी नीलकण्ठ द्वारा लाए कर्ण-फूलों और कंगनों को रात को पहन लेती थी पर दिन को खोल रखती थी. उसके पास कपड़े-लत्ते रखने का जो सन्दूक था, उसी में वह गहनों को भी रखती थी. उसे गहने पहनने का शौक नहीं था. रात को वह उन्हें इसलिए पहन लेती थी कि नीलकण्ठ नाराज न हो. इसी तरह दो साल बीत गए. कमरे में कैद होने पर भी इन्दुमती ने यह दो वर्ष हंसी-खुशी के साथ बिता दिए. इसी तरह नीलकण्ठ भी दिन में पेड़ पर रहता और रात को इन्दुमती के कमरे में. उसे भी अपना पंछी बन जाना इतना बुरा नहीं लगता था क्योंकि यदि वह पंछी न होता तो इन्दुमती के साथ कैसे रहता. वे दोनों एक-दूसरे को मन से चाहते थे और सच्चे प्रेम में ऐसी शक्ति है कि वह बड़े-बड़े संकटों को भी आसानी से झेल लेती है.

उधर रानी राजलक्ष्मी जिसने इन्दुमती को कैद कर रखा था, अपनी बेटी तारामती के लिए किसी योग्य वर की खोज करा रही थी पर अभी तक इस काम में सफलता नहीं मिली थी. इसलिए मां-बेटी दोनों इन्दुमती को ही जिम्मेदार समझती थीं. उन्होंने सोचा कि हो न हो इन्दुमती किसी के द्वारा सब राजकुमारों को तारामती के विरुद्ध बहका देती है. वह गुप्त चिट्ठियां लिखती रहती है. तभी तो आज तक किसी ने तारामती से विवाह करना स्वीकार नहीं किया.

मां-बेटी दोनों ने इन्दुमती क्या करती है, इसका पता लगाने की एक योजना बनाई. एक रात को जब आधी रात का समय हुआ तो मां-बेटी दोनों इन्दुमती के कमरे के बाहर जा पहुंचीं. उन्हें भीतर से किसी के बोलने की आवाज सुनाई दी. वे दरवाजे पर ठिठक गईं और सुनने लगीं. भीतर नीलकण्ठ पंछी होते हुए भी मनुष्य की बोली में इन्दुमती से बातें कर रहा था. रानी को लगा कि उसका सन्देह

ठीक ही था. उसने धक्का देकर दरवाजा खोला और दोनों मां-बेटी भीतर घुस गईं.

एकाएक उन दोनों के कमरे में घुस आने से इन्दुमती को समझ में कुछ नहीं आया कि क्या करूं. फिर कुछ सोचकर उसने खिड़की को अच्छी तरह खोल दिया ताकि नीलकण्ठ बाहर निकल जाए. उसे चिन्ता थी तो नीलकण्ठ की.

रानी बोली, "राजा और राज्य के विरुद्ध तुम्हारा षड्यन्त्र पकड़ लिया गया है. इस देशद्रोह के लिए तुम्हें उचित दण्ड दिया जाएगा."

इन्दुमती ने कहा, "जरा मैं भी सुनूं कि मैंने कौन-सा षड्यन्त्र किया है जो पकड़ लिया गया है. श्रीमती रानी जी, आपने दो वर्ष से मुझे यहां कैद कर रखा है. किसी को मेरे पास आने भी दिया जाता है जिसके साथ मिलकर मैं षड्यन्त्र रचूं!"

रानी और तारामती ने जब इन्दुमती को ध्यान से देखा तो कीमती कर्णफूलों और जड़ाऊ कंगनों पर नजर पड़ी, जिनके नग रात के अंधेरे में भी

चमक रहे थे. इतने मंहगे और सुन्दर गहनों को देखकर वे दोनों ठगी-सी रह गयीं

रानी ने इन्दुमती से व्यंग्यपूर्वक पूछा, "तुम्हारे पास किसी को आने नहीं दिया जाता तो फिर ये गहने कहां से आए? क्या इस कमरे में दबे पड़े थे जो तुमने निकालकर पहन लिए!"

"ये मुझे कहां से मिले, यह मैं आपको नहीं बताऊंगी." इन्दुमती ने निडर होकर उत्तर दिया.

रानी बड़े ध्यान से इन्दुमती की ओर देखने लगी, जैसे उसके चेहरे के भावों को पढ़ रही हो. फिर बोली, "तुम हमें धोखा नहीं दे सकतीं. हमें सब कुछ मालूम है और तुम्हें भी जल्दी ही मालूम हो जाएगा. तुम राज्य के शत्रुओं से मिली हुई हो और यहां के भेद उन्हें बताती रहती हो. इस जासूसी के लिए ही तुम्हें ये कीमती गहने राज्य के शत्रुओं ने दिए हैं."

"यह सब बिलकुल झूठ है. मनघड़न्त बातें हैं.

मैं वर्षों से यहां कैद हूं और दरवाजे पर रात-दिन पहरा बैठा हुआ है. क्या इतने पर भी कोई यहां आकर मुझसे मिलकर षड्यन्त्र रच सकता है?"

रानी और तारामती पैर पटकती वहां से वापस अपने महल में चल गयीं. थोड़ी देर बाद रानी ने एक जासूस लड़की को इन्दुमती के पास सोने के लिए भेज दिया. उसे अच्छी तरह समझा दिया गया था कि इन्दुमती पर कड़ी नजर रखनी है. लड़की ने इन्दुमती से आकर कहा, "रानी ने मुझे आपकी सेवा के लिए यहां भेजा है. आप अकेली रहती उदास न हो जाएं, इसलिए आज से मैं आपके पास ही रहा करूंगी" पर इन्दुमती समझ रही थी कि सेवा के लिए नहीं, जासूसी के लिए भेजा है.

अब राजकुमारी को खिड़की खोलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी. उसे डर लगता था कि यह जासूस लड़की नीलकण्ठ की बात रानी को बता देगी और तब रानी उसे किसी नए संकट में डाल देगी और नीलकण्ठ के लिए भी संकट पैदा हो जाएगा.

उसे खिड़की से नीलकण्ठ के पर फड़फड़ाने की आवाज सुनाई देती पर वह कुछ नहीं कर सकती थी इसी तरह एक महीना बीत गया. न वह खिड़की खोलती और न नीलकण्ठ भीतर आ पाता. दोनों एक-दूसरे की सूरत देखने के भी तरस गए. नीलकण्ठ को तो पता नहीं था कि क्या बात है? उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि राजकुमारी खिड़की क्यों नहीं खोलती है. वह प्रतिदिन रात को खिड़की के पास देर तक पर फड़फड़ाता रहता ताकि राजकुमारी खिड़की खोल दे.

एक महीने तक दिन-रात चौकसी करते-करते वह जासूस लड़की थक गयी थी. एक रात उसे गहरी नींद आ गयी. इन्दुमती ने जब उसे गहरी नींद में सोए देखा तो खिड़की खोल दी. वह घबरायी हुई थी और उसकी आंखें अंधेरे में नीलकंठ को खोज रही थीं. वह बोली—

"नीलगगन - से पंख तुम्हारे।
प्यारे, उड़कर जल्दी आ रे!"

नीलकण्ठ जो महीने भर से खिड़की के पास वाले पेड़ की शाखा पर बैठकर रात काटता था और राजकुमारी इन्दुमती को एक नजर देखने या उसके मुंह से निकले एक शब्द को सुनने के लिए बेचैन रहता था, झट से उड़कर खिड़की के पास आ गया. दोनों एक-दूसरे को देखकर मारे प्रसन्नता के फूले नहीं समाते थे. एक-दूसरे को सुनाने के लिए उनके पास कितनी ही बातें इकट्ठी हो गयी थीं. पर उनके पास समय बहुत कम था. जासूस लड़की किसी भी समय उठ सकती थी और उनका भेद खुल सकता था. वे लगभग सवेरे तक बातें करते रहे.

दूसरी रात को भी जासूस लड़की सो गयी तो राजकुमारी ने खिड़की खोल दी. राजकुमारी ने कहा—

"नीलगगन - से पंख तुम्हारे।
प्यारे, उड़कर जल्दी आ रे!"

नीलकण्ठ भीतर आ गया और यह सारी रात भी बातों में बीत गयी. राजकुमारी ने मन में सोचा, 'यह जासूस लड़की भी सोचती होगी कि सारी रात जागते रहने में क्या तुक है. इसलिए मजे से सोती रहती है.' उन्हें इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि इसके सो जाने से वे दोनों अब फिर सारी रात इकटठे रह सकते हैं और दुःख-सुख की बातें कर सकते हैं.

तीसरे दिन भी वह जासूस लड़की पहले की तरह सो गयी. पर रात का किसी आवाज से चौंक पड़ी और अधजगी-सी लेटी पड़ी रही. उसने अपनी अधखुली आंखों से नीलकंठ को कमरे में बैठा देखा और मनुष्य की बोली बोलते उसकी बातें भी सुनीं. जब प्रभात हुआ तो नीलकण्ठ वहां से विदा हुआ। राजकुमारी ने भी खिड़की बन्द कर ली. आज राजकुमारी की दाहिनी आंख फड़क रही थी जो किसी अपशकुन की सूचना थी. राजकुमारी का मन किसी अनिष्ट की आशंका से बेचैन हो गया. वह

अपने बिछौने पर औंधे मुंह लेटी रोती रही.

वह जासूस लड़की भी उठकर रानी के महल में जा पहुंची और रात को देखा-सुना सब कुछ रानी को बता दिया. रानी ने उस जासूस लड़की को वापस इन्दुमती के पास यह समझाकर भेज दिया कि इन्दुमती को यह न बताना कि उसका भेद तुमने मुझे बता दिया था. और चौकस रहकर उसकी एक-एक बात पर नजर रखो. रानी ने उसे यह भी समझाया कि आज रात को तुम गहरी नींद में सोने का बहाना करके लेट रहना और देखना कि क्या होता है, कौन वहां आता है और क्या बातें करता है.

जासूस लड़की ने वैसा ही किया. वह सो गई और ऐसे खर्राटे भरने लगी जैसे कोई गहरी नींद में सोया हुआ व्यक्ति भरता है. इन्दुमती ने समझा कि यह गहरी नींद में सो गई है. उसने खिड़की खोल दी और पुकारने लगी :

"नीलगगन-से पंख तुम्हारे।
प्यारे, उड़कर जल्दी आ रे !"

राजकुमारी के बार-बार पुकारने पर भी न तो नीलकंठ भीतर आया और न कहीं बाहर ही दिखाई दिया.

बात यह थी कि दुष्ट रानी ने नौकरों से खिड़की के पास वाली वृक्ष की शाखाओं पर तेज धार वाले चाकू बंधवा दिए थे और तीखी नोक दुधारे धारे छुरे आड़े और खड़े बंधवा दिए थे, जिससे जब नीलकण्ठ वहां बैठने के लिए आए तो वह टहनी समझकर चाकू के फल पर बैठने लगे और उसके पंजे कट जाएं और छुरों से वह छिद जाए.

यही हुआ भी. सांझ होने पर ज्योंही नीलकण्ठ शाखा पर बैठने लगा चाकू की धार से उसके पंजे कट गए और लहू बहने लगा जब वह घायल होकर वहां से एकदम उड़ा तो दुधारे छुरों से उसके डैनों में कई घाव हो गए. वह दर्द से कराहता हुआ गिरता-पड़ता किसी तरह वृक्ष के खोखले में पहुंचा और पड़ा रहा.

उधर जादूगरनी के किले में से जब राजकुमार पंछी बनकर उड़ आया तो उसका उड़नखटोला अपने उसके राज्य में जा पहुंचा. उड़नखटोले को खाली आया देखकर राज्य के मंत्री बड़े चिन्तित हुए. उन्हें लगा कि हमारे युवराज पर कोई संकट आ पड़ा है. उन्होंने राजकुमार को खोजने के लिए कई दूत चारों दिशाओं में भेजे. वे दूत प्रत्येक नगर और प्रत्येक गांव में खोजते रहे, पर राजकुमार का कहीं पता न लगा. सभी दूत वापस लौट आए. तब मंत्री को राजकुमार की खोज के लिए भेजा. मंत्री राजकुमार को खोजता-खोजता एक रात उसी वृक्ष के नीचे आ रहा, जिसके खोखले में नीलकण्ठ रहता था. यह मंत्री राजकुमार को खोजने के लिए जगह-जगह शंख बजाता और जब शंख की आवाज सुनकर लोग इकट्ठे हो जाते तो कहता, "जो कोई राजकुमार बलवन्तसिंह का पता बताएगा या उसे हम तक पहुंचाएगा, उसे मुंहमांगा इनाम दिया जाएगा." जहां लोग नहीं होते वहां वह राजकुमार बलवन्तसिंह

का नाम लेकर जोर-जोर पुकारने लगता.

इस वृक्ष के नीचे भी मंत्री ने वैसे ही किया. अपना नाम सुनकर और अपने मंत्री की आवाज पहचानकर वृक्ष के खोखले में पड़े-पड़े नीलकण्ठ ने कहा, "मैं यहां हूं. मैं यहां वृक्ष के खोखले में बैठा हूं. मैं घायल हूं, इसलिए बाहर नहीं आ सकता. यहां आओ और मुझे उठाकर ले जाओ."

मंत्री ने आवाज सुनी तो वृक्ष पर चढ़कर खोजने लगा. जब वह खोखले के पास पहुंचा तो पंछी ने मनुष्य की बोली में कहा, "मैं नीलकण्ठ बन गया हूं. एक जादूगरनी ने मुझे पंछी बना दिया है."

यह सुनकर मंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ. खैर, उसने वृक्ष के खोखले में घायल पड़े नीलकण्ठ को बड़ी सावधानी से उठा लिया.

नीलकण्ठ ने उसे अपनी सारी कहानी कह सुनाई. अब मंत्री को यह चिन्ता हुई कि कैसे तो इस पंछी के घाव ठीक करवाए जाएं और कैसे इसे पंछी से आदमी के रूप में बदला जाए. मंत्री ने तुरन्त नगर

में जाकर एक योग्य वैद्य से नीलकण्ठ के घाव भरने की दवा ली. इस दवाई ने जादू का-सा असर किया और नीलकण्ठ का दर्द तो दवा लगते ही दूर हो गया, घाव भी भर गए. वैद्य की दूसरी दवा से सारी कमजोरी भी दूर हो गयी और नीलकण्ठ फिर स्वस्थ-प्रसन्न हो गया. नीलकण्ठ ने मन्त्री को बताया कि सम्भवतः इन्दुमती ने रानी राजलक्ष्मी से मेरे वहां आने की बात बता दी होगी और रानी ने मुझे मारने के लिए वे चाकू-छुरियां वृक्ष की शाखा पर बंधवा दी होंगी.

मंत्री ने नीलकण्ठ से कहा, "इस इन्दुमती के कारण ही आपको मनुष्य से पक्षी बनना पड़ा और अब यह कष्ट उठाना पड़ा. मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि इस राजकुमारी इन्दुमती को आप सदा-सदा के लिए भूल जाइए. पता नहीं उसके कारण आपको भविष्य में भी क्या-क्या कष्ट न उठाने पड़ें." किन्तु मंत्री का यह सुझाव नीलकण्ठ ने स्वीकार नहीं किया. नीलकण्ठ ने कहा, "मुझे मेरे राज्य में

ले चलो और पिंजरे में बन्द कर रखो ताकि भविष्य में कोई मुझे यों छुरियों-चाकुओं से मारने का प्रयास न करे."

मंत्री ने कहा, "राजकुमार जी, क्या आप पांच वर्ष इसी तरह पंछी बनकर रहना पसन्द करेंगे ! एक राज्य के स्वामी के लिए तो यह बड़ी बुरी बात है. आप याद कीजिए कि महलों में भी ऐसे लोग हैं जो आपको हानि पहुंचा सकते हैं. जब उन्हें यह पता लगेगा कि राजकमार एक पंछी बन गया है तो वे अवश्य विद्रोह करेंगे और राज्य पर अधिकार जमा लेंगे."

राजकुमार ने कहा, "मैं अपने महल में रहूंगा और वहीं से शासन के सारे आदेश दिया करूंगा. आप सब लोग तो मेरी सहायता को होंगे ही."

मंत्री ने कहा, "ज्यों ही आपके विरोधी यह जान लेंगे कि राजकुमार एक तुच्छ पंछी बन चुका है तो वे सबसे पहले आपके ही पर नाचने का प्रयत्न करेंगे."

उधर जब से नीलकण्ठ रात को इन्दुमती के पास नहीं पहुंच रहा था, वह बहुत दुःखी और चिन्तित थी. उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था. वह कभी सोचती कि रानी और तारामती ने कोई नया षड्यंत्र करके उसे फंसाया होगा या पिंजरे में बंद कर रखा होगा या हो सकता है कि जान से ही मार डाला हो. वह सोचती कि नीलकण्ठ जीवित और ठीक-ठाक होता तो मेरे पास अवश्य आता. उस पर कोई न कोई विपत्ति जरूर आ पड़ी है. वह दिन-रात खिड़की में बैठी रोती-कलपती रहती. वह रात को खिड़की में से सिर बाहर निकालकर कहती—

'नीलगगन-से पंख तुम्हारे।
प्यारे, उड़कर जल्दी आ रे!"

जासूस लड़की अब भी इन्दुमती के साथ ही रह रही थी पर उसे उसके दुःख-दर्द से कोई मतलब नहीं था. इन्दुमती की भूख-प्यास और नींद भाग चुकी थी. वह भूखी और उनींदी रहने के कारण

पहले तो दुर्बल हो गयी और फिर बीमार.

उसके पिता के राज्य में भी परिवर्तन हुआ. राजा विजयसेन बहुत बूढ़ा हो चुका था. वह बहुत बीमार पड़ा तो बड़े-बड़े वैद्यराज उसकी चिकित्सा करने लगे पर कोई लाभ नहीं हुआ. रोग बढ़ता ही गया. अन्त में एक दिन राजा की मृत्यु हो गयी.

मंत्रियों ने मिलकर सोचा कि अब राजा का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए. वे रानी और उसकी बेटी तारामती को राज्य का भार सौंपना नहीं चाहते थे. उनकी इच्छा इन्दुमती को राज्याधिकार सौंपने की थी. पर रानी तो ऐसा कभी भी होने देना नहीं चाहती थी. वे सब मिलकर राजमहल में आए और रानी से कहला भेजा कि इन्दुमती को कैद से मुक्त करें ताकि उसे राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया जाए और गद्दी पर बिठाया जाए.

यह सुनते ही रानी आगबबूला हो गयी. उसने अपने महल की खिड़की में से सिर निकालकर मंत्रियों को आज्ञा दी कि वे यहां से अपने-अपने घरों में भाग

जाएं नहीं तो उन्हें दण्ड दिया जाएगा.

इस पर मंत्रियों को भी क्रोध आ गया. राज्य के पदाधिकारी और कर्मचारी भी मंत्रियों के समर्थक थे. वे सब लोग तोड़-फोड़ करके महल में जा घुसे और रानी को घसीटते हुए महल के आंगन में ले आए. उन्होंने लाठियों और पत्थर से मारकर रानी का कचूमर निकाल दिया. रानी वहीं ढेर हो गयी.

मां को इस तरह मारा जाता देखकर तारामती बहुत घबराई. उसे लगा कि ये लोग मेरा भी यही हाल करेंगे. उसने अपनी जादूगरनी धर्ममाता की दी हुई धूनी को जलाया. इस धूनी के प्रभाव से वह दूसरों को दिखना तो बंद हो गयी किन्तु उसे सब कुछ दिखता रहा. वह चुपचाप महल से बाहर निकल गयी. जादू के प्रभाव से उसे किसी ने निकलते नहीं देखा. वह महल से निकलकर जादू के ही प्रभाव से अपनी जादूगरनी धर्ममाता के पास जा पहुंची.

मंत्री, सामंत और राज्याधिकारी फिर एकत्र हुए. उन्हें तो राज्य-शासन चलाने की चिन्ता थी.

उन्होंने राजकुमारी इन्दुमती को कैद से मुक्त किया. उन्होंने तत्काल उसकी चिकित्सा की व्यवस्था की. फिर उन्होंने राजकुमारी को बताया कि आपके पिता महाराज का स्वर्गवास हो गया है और आपकी सौतेली मां को क्रुद्ध भीड़ ने मार डाला है तथा तारामती भी महल से भाग गयी है. उन्होंने राजकुमारी के पांवों में पड़कर उसके प्रति अपनी राजभक्ति प्रकट की और प्रार्थना करने लगे कि अब आप इस राज्य की बागडोर संभालें. पर राजकुमारी रोग और शोक के कारण इस योग्य नहीं थी, कि वह तत्काल राज्य-कार्य संभाल सके.

फिर भी मंत्रियों ने ज्योतिषियों को बुलाया और राजकुमारी के राज्याभिषेक के लिए शुभ-मुहूर्त पूछा. कुछ दिन बाद का समय राज्याभिषेक के लिए निश्चित हुआ और तब तक राजकुमारी स्वस्थ हो गयी. बड़ी धूमधाम से यह कार्य सम्पन्न हुआ. सारे राज्य में उत्सव मनाया गया बड़े-बड़े भोज हुए. राग-रंग, खेल-तमाशों का तो कहना ही क्या !

राजकुमारी इन्दुमती के भाग्य ने एकदम पलटा खाया था. उसके दुःख के दिन बीत गए थे. वह कुछ दिन पहले तक जेल में बन्द थी और आज सिंहासन पर बैठी हुई थी. राज्य पर उसका शासन था और उसकी आज्ञा से सारे काम होते थे. अब उसे केवल चिन्ता थी तो नीलकंठ की. वह उसके लिए बेचैन थी. उसे कुछ पता नहीं था कि वह जीवित भी है या नहीं. उसने कुछ दिनों में ही राज्य-शासन की पूरी-पूरी व्यवस्था कर दी और निश्चय किया कि वह स्वयं नीलकंठ की खोज करेगी. उसने राज्य के खजाने से बहुत से रत्न, हीरे, लाल, मोती निकाले और एक थैले में भर लिए और एक दिन किसी से बिना कुछ कहे, एकदम अकेली महलों से निकल पड़ी.

राजकुमार बलवन्तसिंह के राज्य का मंत्री जो उसकी खोज के लिए निकला हुआ था और जिसने पंछी के

रूप में राजकुमार को खोज लिया था, नीलकंठ को लेकर किसी ऐसे जादूगर की खोज करने लगा जो पंछी नीलकण्ठ को फिर से राजकुमार बना दे. इस काम के लिए जादूगरनी के जादू को तोड़ने भर का काम था. राजकुमार तो वह था ही. जादू ने उसे पंछी बना दिया था. बहुत खोज करने पर भी उसे ऐसा कोई जादूगर नहीं मिला जो पंछी को मनुष्य रूप में ले आए. अन्त में मंत्री ने उसी जादूगरनी के पास जाने का निश्चय किया और वह वहां जा भी पहुंचा. उसने जादूगरनी से प्रार्थना की कि वह राजकुमार को पंछी से फिर मनुष्य बना दे.

जादूगरनी ने अपनी पुरानी शर्त दोहरायी कि यदि वह मेरी धर्मपुत्री तारामती से विवाह करना स्वीकार कर ले तो बना सकती हूं.

मंत्री ने कहा, "आप इसे फिर से मनुष्य बना दें और तारामती को भी हमारे साथ भेज दें. हम तारामती को राजकुमार के महल में ही ठहराएंगे और इस बात के लिए पूरा प्रयत्न करेंगे कि राजकुमार

विवाह के लिए राजी हो जाए. हमें छः महीने का समय दीजिए. अगर फिर भी राजकुमार नहीं माना तो बेशक इसे फिर से पंछी बना देना."

यह शर्त जादूगरनी ने स्वीकार कर ली. उसने तारामती को बड़े कीमती गहने-कपड़े भेंट देकर और अपने जादू के डंडे से छूकर नीलकण्ठ को फिर से मनुष्य बनाकर उन्हें वहां से विदा किया. जादूगरनी के मंत्र से वे तीनों उड़कर राजकुमार बलवन्त के राज्य में जा पहुंचे.

उधर राजकुमारी इन्दुमती भी भिखारिन जैसा वेश बनाए, अपने बालों को बिखराकर उनसे अपने सुन्दर चेहरे को ढके हुए दर-दर भटकने लगी. रत्नों से भरी मैली-कुचैली झोली को वह कंधे से ऐसे लटकाए रखती जैसे भीख डालने की झोली हो. वह बिना आराम किए एक ग्राम से दूसरे ग्राम में और एक नगर से दूसरे नगर में होती हुई राजकुमार बलवन्तसिंह के राज्य की ओर जाने का प्रयत्न करने लगी पर क्योंकि वह किसी से भी रास्ता बिना पूछे

बढ़ी जा रही थी, इसलिए रास्ता भूल गयी थी और राजकुमार बलवन्त के राज्य की दिशा में जाने के बजाए बिलकुल उल्टी दिशा में चल रही थी और भटक गयी थी.

चलते-चलते एक दिन वह एक झरने से पानी पीकर उसके पास एक पत्थर पर सुस्ताने बैठ गयी. उसने अपने पांव पानी में लटका दिए ताकि थकान दूर हो जाए. वह वहां बैठी सुस्ता ही रही थी कि एक बुढ़िया उसके पास आयी. बेचारी बुढ़िया की कमर झुकी हुई थी और लाठी के सहारे वह चल रही थी. बुढ़िया बोली, "अरी प्यारी बिटिया ! तू यहां अकेली बैठी क्या कर रही है ?"

"अम्मा ! मैं तो सदा चिन्ता में डूबी रहती हूं, इसलिए मुझे किसी के साथ की जरूरत ही नहीं पड़ती. बस, चिन्ता ही मेरी साथिन है" यह कहते-कहते इन्दुमती की आंखों में आंसू भर आए.

बुढ़िया बोली, "अरी, रोती क्यों है ! तेरी आंखों में पानी देखकर तो मेरा मन भी भर आया. तू मुझे

बता तो सही कि तुझे दुःख किस बात का है. हो सकता है मैं तेरी कुछ सहायता कर सकूं."

बुढ़िया के सहानुभूतिपूर्ण शब्द सुनकर इन्दुमती ने अपनी सारी रामकहानी कह सुनाई. सारी कहानी सुनकर तो बुढ़िया एकदम सीधी खड़ी हो गई. उसने लाठी भी फेंक दी. अब न तो उसकी कमर झुकी हुई थी, न कहीं बुढ़ापा था और न गरीबी. वह एक सुन्दर युवती में बदल गई, जिसने बड़े बढ़िया गहने-कपड़े पहन रखे थे. वह मुसकराती हुई, इन्दुमती से बोली, "वह राजकुमार जिसे तू चाहती है, पंछी से मनुष्य बन गया है. वह जादूगरनी मेरी ही बहन है. उसी ने फिर से उसे मनुष्य बना दिया है. वह राजकुमार इस समय अपने राज्य में पहुंच चुका है. तुम दिल छोटा मत करो. तुम उसके महल में पहुंच जाओगी तो तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी. लो, मैं तुम्हें ये चार अंडे देती हूं. जब-जब तुम्हें किसी भी प्रकार की सहायता की आवश्यकता पड़े तब-तब इनमें से एक-एक अंडा फोड़ लेना. तुम्हें

अंडे से तुम्हारी मनचाही चीज मिल जाएगी." यह कहकर वह स्त्री वहां से एकाएक गायब हो गई.

इन्दुमती राजकुमार बलवन्तसिंह के राज्य की ओर चलती रही. उस स्त्री के कहने पर विश्वास करके वह कुछ प्रसन्न थी. उसे लग रहा था कि मेरी मनोकामना शीघ्र ही पूरी होने वाली है. सात दिन चलने के बाद वह एक पर्वत की तलहटी तक जा पहुंची. अब आगे पर्वत की चढ़ाई थी. ऊंची बर्फ से ढकी चोटियों को पार करना अत्यन्त कठिन था. इन्दुमती ने थोड़ी दूर तक चढ़ने का प्रयत्न किया पर पांव फिसल जाने के कारण नीचे आ गिरी और छोटी-मोटी कई चोटें भी लगीं. वह यह सोच ही रही थी कि अब क्या होगा कि इतने में उसे जादुई अंडे की बात याद आ गई. उसने झोली में से एक अण्डा निकालकर तोड़ डाला. उसमें से रस्सों से बनी एक सीढ़ी निकली. उसका एक छोर तो इन्दुमती के पास था और दूसरा छोर पहाड़ की चोटी तक जा पहुंचा. साथ ही एक विशेष प्रकार के जूते और

दस्ताने भी निकले. इन जूतों और दस्तानों को पहन लेने से रस्सों की उस सीढ़ी पर चढ़ने में बड़ी सुविधा हो गई और बर्फ से हाथ-पांवों की सुरक्षा भी. इन्दुमती सीढ़ी के द्वारा पर्वत की चोटी तक जा चढ़ी.

पहाड़ की चोटी पर पहुंचकर दूसरी ओर को नीचे उतरना था. पर यह काम तो और भी कठिन था. ढलान एकदम सीधी थी और बर्फ से ढकी हुई. ऐसा लगता था जैसे शीशे की चादर खड़ी कर रखी हो. कहीं पैर टिकाने की जगह नहीं थी. इस कठिनाई से पार पाने के लिए इन्दुमती ने दूसरा अण्डा तोड़ा. इस अण्डे में से एक पक्षी निकला. यह बढ़ते-बढ़ते बहुत बड़ा हो गया. इतना बड़ा कि इन्दुमती उसकी पीठ पर बैठ गई और वह उसे लेकर उड़ चला. उसने राजकुमारी को राजकुमार बलवन्तसिंह की राजधानी में उसके महल के मुख्य द्वार के पास जा उतारा.

वहां उसने पहरेदारों से पूछा कि राजकुमार से भेंट कैसे हो सकती है ? उन्होंने बताया कि कल

राजकुमार बलवन्तसिंह मन्दिर में जाएंगे. उनके साथ राजकुमारी तारामती भी होंगी, क्योंकि राजकुमार ने राजकुमारी तारामती से विवाह करने का निश्चय कर लिया है. उनका विवाह मन्दिर में भगवान् को साक्षी करके होगा. यह सुनकर इन्दुमती फिर उदास हो गई. उसे एक बार फिर निराशा ने आ घेरा. फिर उसने सोचा कि मैं यहां ठीक समय पर पहुंच गई हूं और मुझे इन अन्तिम घड़ियों में निराशा छोड़कर अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए. किन्तु मार्ग की थकान के कारण वह निढाल हो चुकी थी. इस समय न तो उसमें बैठने की शक्ति थी और न बोलने की. वह मुख्य द्वार के पास ही एक शिला पर लेट गई. उसने अपने बालों को बिखराकर मुंह को ढक लिया और वहां पड़ रही.

दूसरे दिन प्रातः वह मन्दिर की ओर चल पड़ी. वहां बड़ी भीड़-भाड़ थी और उसे पहरेदार मन्दिर में जाने नहीं देते थे पर वह उनकी नजर बचाकर

मन्दिर में चली ही गई. मन्दिर के आंगन में दो सिंहासन रखे हुए थे—एक राजकुमार के लिए और दूसरा तारामती के लिए. इन्दुमती तारामती के सिंहासन के पास एक खम्भे के साथ खड़ी हो गई. पहले राजकुमार बलवन्तसिंह वहां आया. वह राजकीय वेशभूषा में था. बड़ा ही सुन्दर लग रहा था. उसके पीछे-पीछे तारामती चल रही थी. उसने भी बड़े कीमती गहने-कपड़े पहन रखे थे और खूब सजी हुई थी. तारामती ने अपने सिंहासन से कुछ ही दूर खड़ी, मैली-कुचैली इन्दुमती को देखा. वह उस पर बरस पड़ी. बोली, "तू कौन है और यहां क्यों खड़ी है ? निकल यहां से !"

इन्दुमती ने कहा, "मैं गांव से आयी हूं. मेरे पास कुछ बहुमूल्य चीजें हैं, जिन्हें मैं आपको दिखाना चाहती हूं." उसने अपने थैले में हाथ डाला और कर्णफूलों का वह जोड़ा, जो कभी राजकुमार ने उसे दिया था, दिखाया. तारामती ने कर्णफूलों में जड़े नगों को कांच के नग समझा क्योंकि बेचनेवाली

की शक्ल-सूरत ऐसी थी कि इसके पास कीमती और असली नग हो नहीं सकते थे. तारामती ने कहा, "इनकी गढ़न मुझे पसन्द है. वैसे मैं इतने सस्ते गहने क्यों पहनूंगी. बोलो, तुम इनका क्या मूल्य लोगी ?"

इन्दुमती ने कहा, "आप इन्हें किसी जौहरी को दिखाकर उससे इनकी कीमत पूछ लीजिए. वह जितनी कीमत बताएगा मैं उतनी ही ले लूंगी."

तारामती ने वे कर्णफूल राजकुमार को दिखाए. उन्हें देखकर राजकुमार को याद आया कि जिन दिनों वह नीलकण्ठ पंछी के रूप में था, उसी ने ये कर्णफूल इन्दुमती को दिए थे. उसने तारामती से कहा, "ये तो बहुत कीमती हैं. मेरे विचार में इनकी टक्कर के कर्णफूल दूसरे नहीं होंगे."

तारामती ने गहने बेचनेवाली से पूछा, "तुम इनका क्या मूल्य लोगी ?"

इन्दुमती बोली, "रानी जी, आप इनका पूरा मूल्य नहीं दे सकेंगी. पर यदि आप मुझे गुम्बद महल में रातभर सोने दें तो मैं ये कर्णफूल आपको दे

सकती हूं."

तारामती ने यह शर्त स्वीकार कर ली. तारामती इस सौदे से बहुत प्रसन्न थी. वह समझ रही थी कि गांव की यह लड़की मूर्ख है.

बात यह थी कि जिन दिनों राजकुमार बलवन्त-सिंह, नीलकण्ठ पंछी के रूप में कैद, राजकुमारी इन्दुमती के पास रात-रातभर बातें करता रहता था, उन दिनों उसने राजकुमारी को बताया था कि मेरे राजमहल में गुम्बद महल को इस ढंग से कारीगरों ने बनाया है कि वहां कोई धीरे-से भी कुछ कहे तो मुझे अपने महल में सुनाई दे जाता है. इसीलिए इन्दुमती ने वहां सोने की शर्त रखी. उसका विचार था कि वह वहां से अपनी सारी बातें राजकुमार को सुना सकेगी.

तारामती की आज्ञा से गहने बेचने वाली ग्रामीण लड़की को गुम्बद महल में सुला दिया गया. नौकरों ने द्वार बन्द किया और नीचे चले गए. उनके जाते ही इन्दुमती ने कहना शुरू कर दिया. वह बोली,

"ओ निष्ठुर पंछी ! यही अपना वचन पूरा करने का तुम्हारा तरीका है. बड़ी जल्दी मुझे भूल गए. आज तुम तारामती के हो गए. इन कर्णफूलों को देखकर भी जो कभी तुमने मुझे दिए, तुम्हें मेरी याद नहीं आयी." बोलते-बोलते वह रो पड़ी. वह बोलती भी जाती और रोती भी जाती. वह सारी रात अपने प्रेम की दुहाई देकर राजकुमार को सुनाती रही. उसने समझा कि मैं जो कुछ कह रही हूं, वह सब कुछ राजकुमार को सुनाई दे रहा होगा.

प्रातः राजकुमारी तारामती ने उससे पूछा कि तू रातभर क्या कह रही थी. इन्दुमती ने उत्तर दिया, "मुझे रात को अच्छी नींद आयी. मुझे स्वप्न में बड़बड़ाने की आदत है. उसी आदत के कारण हो सकता है, रात मैंने कुछ कहा हो."

इन्दुमती का कहा हुआ एक शब्द भी राजकुमार ने नहीं सुना था. वास्तव में बात यह थी कि जब से वह इन्दुमती से जुदा हुआ था, उसे रात को नींद नहीं आती थी. इन्दुमती की याद में वह तरह-तरह

के विचारों में खो जाता और उसकी नींद भटक जाती. इसलिए जब वह रात को सोने लगता तो उसे नींद आने की दवा खिला दी जाती थी, जिसके कारण वह रातभर गहरी नींद में सोया रहता.

इन्दुमती बड़ी बेचैन थी. वह सोचती, 'यदि राजकुमार ने मेरी रात की सारी बातें सुनी हैं और फिर भी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं किया तो मानना पड़ेगा कि वह मुझे भूल चुका है. और यदि उसने सुना है तो फिर मुझे क्या करना चाहिए ?' वह एक रात फिर वैसा ही करना चाहती थी पर अब उसके पास कोई ऐसी अद्‌भुत चीज नहीं थी जिसे राजकुमारी को देकर वह गुम्बद महल में सोने की आज्ञा ले लेती. उसने झोली में से तीसरा अण्डा निकाला और उसे भी फोड़ डाला. अण्डे में से एक छोटी-सी बग्घी निकली जिसे छः चुहियां खींच रही थीं और एक चुहिया कोचवान की जगह बैठी थी. बग्घी में चार पुतलियां नाच रही थीं. उन्हें देखकर हंसी फूट पड़ती थी. इन्दुमती उन्हें देखकर खिल

उठी. शाम को तारामती जिस रास्ते टहलने जाती थी, वह उस सड़क पर जा खड़ी हुई और ज्यों ही उसने तारामती को आते देखा, वह छोटी-सी बग्घी सड़क पर छोड़ दी ताकि तारामती की नजर उस पर पड़े. तारामती छः चुहियों द्वारा खींची जाती उस बग्घी को देखकर आश्चर्यचकित रह गयी. जब उसने ध्यान से देखा तो उसे बग्घी में चार पुतलियां भी नाचती दिखायी दीं. वह ठिठककर खड़ी हो गयी. उसने इन्दुमती से कहा, 'ओ लड़की ! क्या तुम इस बग्घी को बेचोगी ?"

लड़की ने कहा, "हां, अगर आप मुझे आज की रात फिर गुम्बद महल में सोने दें तो इसे मैं आपको दे सकती हूं."

तारामती ने स्वीकार कर लिया और बग्घी को ले लिया.

जब रात हुई तो इन्दुमती फिर गुम्बद महल में जा सोयी. इस रात उसने पिछली रात की तरह शिकायतें नहीं कीं, उलाहने भी नहीं दिए. वह बड़ी

मीठी-मीठी बातें करती रही. पर राजकुमार तो नींद की गोलियां खाकर सो चुका था. उसने कुछ नहीं सुना. किन्तु पहरेदार रात भर इस पगली लड़की का बड़बड़ाना सुनते रहे और आपस में बातें करते रहे कि यह पगली पता नहीं यहां आकर क्यों सोती है और क्या कहती है.

दूसरे दिन भी राजकुमार की ओर से जब कोई पूछताछ नहीं हुई तो उसने समझ लिया कि मेरा रात भर का बोलना बेकार गया. अब उसे एक ही बात का सहारा था कि शायद चौथे अंडे को फोड़कर कुछ बात बन जाए. यह सोचकर उसने चौथा अंडा भी फोड़ डाला. इस बार अंडे में से एक पिंजरा निकला, जिसमें छः पंछी थे. ये पंछी बड़ा बढ़िया गाते और बोलते थे. वह उस पिंजरे को लेकर तारामती से मिलने चली. वहां और भी कई मिलनेवाले बैठे हुए थे और प्रतीक्षा कर रहे थे. इन्दुमती वहां बैठ गयी और अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगी. इतने में एक राजकर्मचारी आया और इन्दुमती से बोला,

"अरी लड़की ! अगर हम राजकुमार को नींद की दवा खिलाकर न सुलाते होते तो तू तो उन्हें अपनी बड़बड़ाहट से रात भर सोने न देती. तू रात भर क्या बड़बड़ाती है ?"

अब इन्दुमती के सामने सारी बात स्पष्ट हो गयी कि राजकुमार उसकी बातों पर ध्यान क्यों नहीं देता है. उसने झोली में हाथ डाला और सोने का एक कीमती गहना निकालकर उस राजकर्मचारी के हाथ में थमाते हुए कहा, "आप बिलकुल उल्टी बात सोच रहे हैं. आप आज रात राजकुमार को नींद की दवा मत दीजिए और फिर देखिए, आपको फिर कभी उन्हें सुलाने के लिए नींद की गोलियां नहीं खिलानी पड़ेंगी. उन्हें बिना दवाई के ही गहरी नींद आने लगेगी."

सोने का गहना देखकर उस राजकर्मचारी ने सोचा कि यह अवसर हाथ से नहीं खोना चाहिए. उसने इन्दुमती को कहा कि आज रात को ऐसा ही होगा. थोड़ी देर बाद तारामती वहां आयी तो उन पंछियों

ने बड़ी सुरीली आवाज में चहकना प्रारम्भ कर दिया. फिर उनमें से एक पक्षी ने तारामती से कहा, "मैं ज्योतिषी हूं और तुम्हारा भविष्य बता सकता हूं."

दूसरा पंछी बोला, "मैं डाक्टर हूं. मैं हर रोग का इलाज कर सकता हूं."

तारामती आश्चर्यचकित होकर इन पंछियों की बातें सुन रही थी. उसने उस लड़की से इन पंछियों की कीमत पूछी. इन्दुमती ने फिर वही बात कही कि आज रात भी मुझे गुम्बद महल में सोने दो तो इन पंछियों को मैं तुम्हें दे सकती हूं.

रात हुई तो इन्दुमती फिर गुम्बद महल में जा सोयी. उसने कहना शुरू किया, "ओ झूठे राजकुमार ! मैंने तुम्हें खोजने के लिए कैसे-कैसे संकट झेले, पर आज मैं तुम्हें एक नजर देखने से भी लाचार हूं. और तारामती जो तुम्हें ठगती रही, आज तुम्हारी आंखों में चढ़ी हुई है. मेरे साथ जैसा व्यवहार तुमने किया है ऐसा तो कोई शत्रु भी किसी

के साथ नहीं करता. क्या तुम उन सब बातों को भूल चुके हो जो तुमने उस समय की थीं, जब तुम बच्चे के रूप में थे." और फिर उसने उस समय की अनेक बातें ज्यों-की-त्यों दोहरा दीं.

आज राजकुमार को नींद की दवा नहीं खिलाई गयी थी और इसीलिए उसे नींद भी नहीं आयी थी. राजकुमार को इन्दुमती की एक-एक बात स्पष्ट सुनाई दे रही थी. वह बिछौने पर उठ बैठा था और ध्यान से सुन रहा था. उसने इन्दुमती की आवाज पहचान ली थी पर वह यह नहीं समझ पा रहा था कि रात के समय यह आवाज कहां से आ रही है. उसने इन्दुमती की बातों के उत्तर देने प्रारम्भ किए और इस तरह वे दोनों रात भर बातें करते रहे. राजकुमार ने पूछा कि मैं तुम्हें कहां खोजूं ? इन्दुमती ने उत्तर दिया कि वह जो एक ग्रामीण लड़की आयी थी और कर्णफूल बेच रही थी, उसकी खोज करवाओ.

राजकुमार ने उसी समय पहरेदार को बुलाकर

आज्ञा दी कि यदि तुम्हें कहीं वह लड़की मिले तो उसे उसी समय मेरे पास ले आओ.

पहरेदार ने कहा, "महाराज ! वह इस समय गुम्बद महल में सो रही है. सोती हुई को जगाकर ले आऊं क्या ?"

राजकुमार उसी समय उठ बैठा और स्वयं गुम्बद महल में जा पहुंचा. वह ग्रामीण लड़की उसकी अपनी चहेती राजकुमारी इन्दुमती ही थी. इस समय इन्दुमती ने कपड़े भी राजकुमारियों जैसे पहन रखे थे और ग्रामीण लड़की वाले कपड़े झोली में रख लिए थे. उसे देखते ही राजकुमार मारे प्रसन्नता के उछल पड़ा. राजकुमारी भी राजकुमार को देखकर खिल उठी थी. वे दोनों सारी रात अपनी-अपनी रामकहानी एक-दूसरे को सुनाते रहे.

प्रातःकाल होते ही वह स्त्री जिसने इन्दुमती को चार अंडे दिए थे, महल में आ पहुंची. उसने बताया कि मैंने उस जादूगरनी को मना लिया है और अब वह राजकुमार पर अपना जादू नहीं

चलाएगी.

तारामती को पता लग गया था कि गुम्बद महल में सोनेवाली यह लड़की इन्दुमती ही है. वह गुस्से में भरी हुई उसे उल्टी-सीधी बातें सुनाने चली आ रही थी.

पर जिस जादूगरनी ने इन्दुमती की सहायता की थी उसने उसे अपने जादू से कौआ बना दिया. कौवा बनी तारामती झट से उड़कर पेड़ पर जा बैठी और 'कांव-कांव' करने लगी. फिर वह कौवा कहां उड़ गया, कुछ पता नहीं.

अब राजकुमार बलवन्तसिंह और राजकुमारी इन्दुमती का विवाह होने में कोई अड़चन नहीं थी. उन दोनों का विवाह हो गया और वे सुख से रहने लगे.